राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष-47 ■ अंक-03 ■ जून 2025 ■ ₹10 ■ पृष्ठ-36

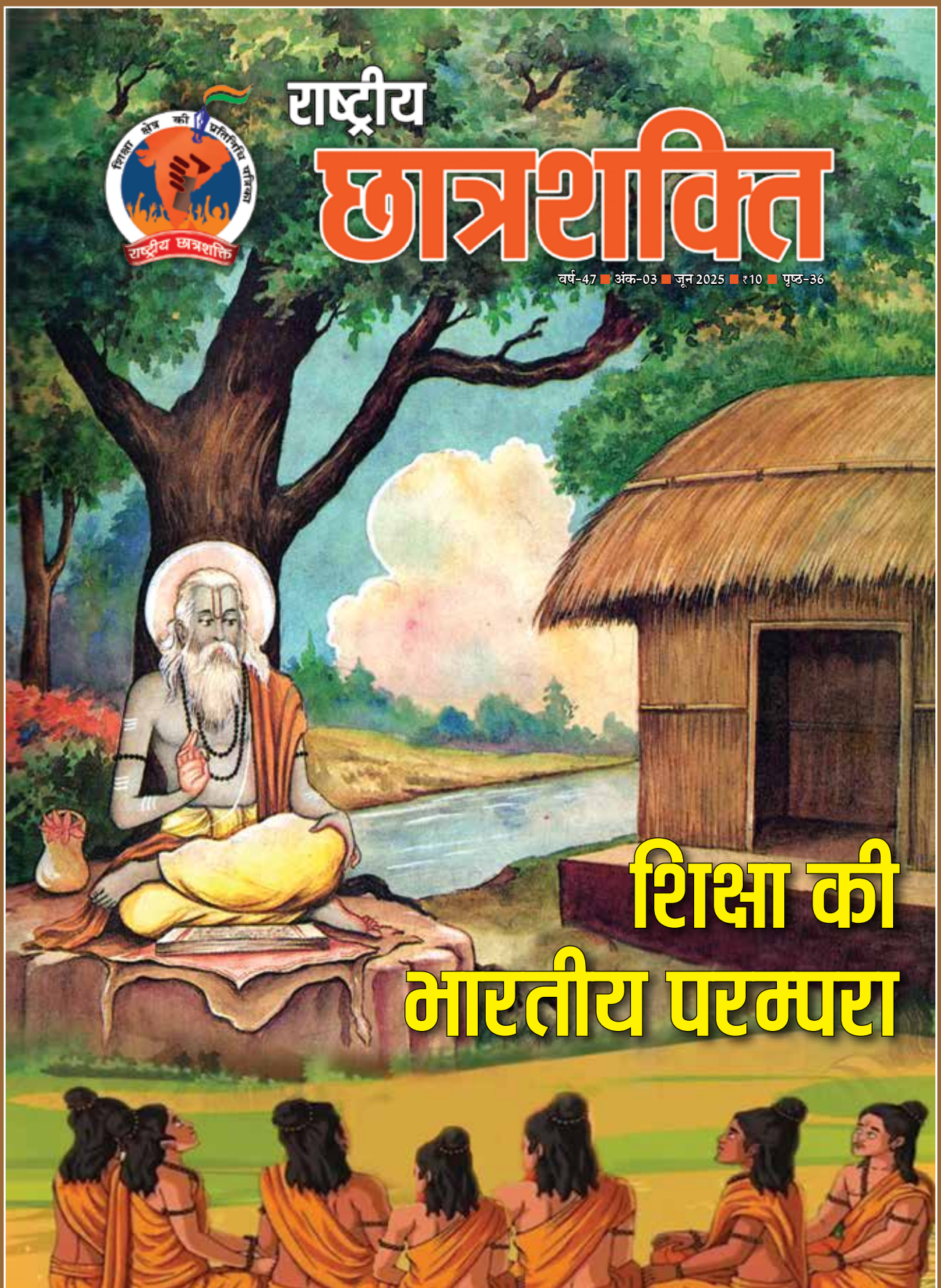

शिक्षा की भारतीय परम्परा

रायपुरः राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक से पहले आयोजित नागरिक अभिनंदन समारोह का उद्घाटन करते हुए छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, संत बालयोगेश्वर रामबालक दास महात्यागी एवं अभाविप पदाधिकारी

रायपुरः नागरिक अभिनंदन समारोह में सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देते हुए कलाकार

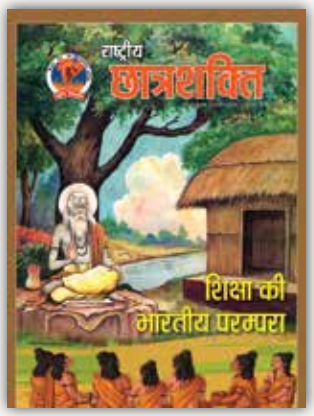

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष-47, अंक-03
जून 2025

संपादक
आशुतोष भटनागर
संपादक-मण्डल
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह

संपादकीय पत्राचार
राष्ट्रीय छात्रशक्ति
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti
www.instagram.com/ Rchhatrashakti

स्वामी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **राजकुमार शर्मा** द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नई दिल्ली - 110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित। **संपादक** *पीआरबी अधिनियम के तहत समाचारों के चयन के लिए जिम्मेवार।

अबकी बार

05 **शिक्षा की भारतीय परम्परा**

ब्रिगेडियर जनरल अलेक्जेंडर वाकर, जिसने भारत में 1780-1810 तक ईस्ट इंडिया कंपनी में नौकरी की थी, उसने लिखा है कि किसी समाज में शिक्षा को शायद इतना महत्व नहीं दिया जाता था, जितना...

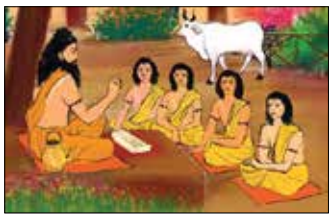

संपादकीय	04
भारत की ज्ञान परंपरा	08
आपातकाल की 50वीं वर्षगांठ मीसाबंदियों के साथ मनाएगी अभाविप	10
भाषा अनेक-भाव एक	17
पारित हुए चार प्रस्ताव	19
इच्छाशक्ति के दिशा-निर्धारण का मानस तंत्र है विमर्श	22
इतिहास बदलने में जुटी यूनुस सरकार ने बंगबंधु की उपाधि छीनी	23
India expands footprints in the Mediterranean	24
परिषद यानी राष्ट्रवाद	27
Fairness : Social Justice Initiatives Impacting the Bhil Tribe	30
रैगिंग के विरुद्ध कार्रवाई न करने वाले 89 उच्च शिक्षा संस्थानों को नोटिस	31
पहली बार जाति गणना के साथ होगी देश की 16वीं जनगणना	32
'रन फॉर मारवाड़' मैराथन का आयोजन	33
छात्रों को मिलेगी मानव मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता की शिक्षा	34

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

विपरीत परिस्थितियों में ही व्यक्ति की परख होती है। यही नियम समाज, संगठनों और राष्ट्र पर भी समान रूप से लागू होता है। काल परीक्षा लेता है और उस परीक्षा में कोई संगठन या समाज कैसे प्रतिक्रिया देता है, इससे ही उसके भविष्य का निर्धारण होता है।

स्वतंत्र भारत में एक ऐसा ही परीक्षा का अवसर 26 जून 1975 को आया, जब तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सत्ता में बने रहने के लिए देश पर आपातकाल थोपकर अपने समस्त राजनीतिक विरोधियों को जेलों में ठूंस दिया। 21 माह तक चले आपातकाल के दौरान सरकार ने 48 अध्यादेश जारी किए और अनेक बार संविधान संशोधन कर, संविधान प्रदत्त शक्ति संतुलन को अपने पक्ष में कर लिया। न्यायपालिका की शक्तियों में कटौती कर दी गई और विधायिका में तो अधिकांश निर्वाचित प्रतिनिधि जेलों में थे। मीडिया पर सेंसरशिप लागू थी। वह समाचार ही जारी किए जा सकते थे, जिनकी अनुमति सरकार देती थी। कुछ प्रमुख पत्रकारों को जेल में डाल दिया गया और अधिकांश ने घुटने टेक दिए। मीडिया की इस प्रवृत्ति पर श्री लालकृष्ण आडवाणी की टिप्पणी चर्चित रही, जिसमें उन्होंने कहा था कि पत्रकारों को झुकने के लिए कहा गया था किन्तु वह रेंगने लगे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सहित अनेक सामाजिक, राजनीतिक संगठनों की गतिविधियों को प्रतिबंधित कर दिया गया। अभाविप यद्यपि इन प्रतिबंधित संगठनों की सूची में नहीं थी, फिर भी अपनी राष्ट्रीय विचारधारा और लोकतांत्रिक मूल्यों पर विश्वास के कारण सरकार के निशाने पर थी।

आपातकाल की घोषणा होते ही सबसे पहली प्रतिक्रिया देते हुए परिषद ने दिल्ली विश्वविद्यालय के तत्कालीन छात्रसंघ अध्यक्ष स्व. श्री अरुण जेटली तथा महासचिव स्व. श्री हेमन्त विश्नोई के नेतृत्व में विरोध प्रदर्शन किया। श्री जेटली को गिरफ्तार कर लिया गया और उन पर गंभीर आरोप लगाए गए। श्री हेमन्त विश्नोई भी पकड़े गए और उनके साथ पुलिस ने बर्बरता की सारी सीमाएं लांघ दीं। फिर भी वह उनसे साथियों के बारे में जानकारी पाने में असफल रहे।

लोकतंत्र पर छाए इस अभूतपूर्व राष्ट्रीय संकट के समय परिषद कार्यकर्ताओं ने जिस साहस और शक्ति के साथ तानाशाही को चुनौती दी, वह स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

प्रतिबंधित संगठन न होते हुए भी अभाविप के 4500 कार्यकर्ताओं को देश भर में गिरफ्तार किया गया। यह कार्यकर्ता भूमिगत रह कर तानाशाही को चुनौती देने का काम कर रहे थे। 650 से अधिक कार्यकर्ताओं को आन्तरिक सुरक्षा का रखरखाव अधिनियम के अन्तर्गत बंदी बनाया गया। 1500 से अधिक कार्यकर्ता भारत सुरक्षा (संशोधन) अधिनियम के अंतर्गत निरुद्ध किए गए । स्मरण रहे कि इन दोनों कानूनों की तुलना आज के आतंकवाद विरोधी कानूनों से ही की जा सकती है, जिनमें सफाई, सुनवाई और जमानत जैसा कोई अधिकार नहीं होता। समाज में व्याप्त भय के वातावरण को दूर करने के लिए सार्वजनिक रूप से भारत माता की जय और वन्दे मातरम का उदघोष करते हुए सत्याग्रह करने का निर्णय किया गया। परिषद के कार्यकर्ता इसमें भी अग्रणी रहे। 11 हजार से अधिक कार्यकर्ताओं ने सत्याग्रह कर सत्ता की निरंकुशता को चुनौती दी।

लोकतंत्र पर छाए इस अभूतपूर्व राष्ट्रीय संकट के समय परिषद कार्यकर्ताओं ने जिस साहस और शक्ति के साथ तानाशाही को चुनौती दी, वह स्वर्णाक्षरों में अंकित है। आपातकाल के पचास वर्ष बाद आज पूरी यात्रा का सिंहावलोकन हमें आनंदमिश्रित गर्व से भर देता है। जिन कार्यकर्ताओं ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया, उनमें से अनेक आज हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु उनकी स्मृतियों को साथ लेकर परिषद कार्यकर्ता उनके दिखाए मार्ग पर चलते रहेंगे, यह विश्वास उन दिव्यात्माओं को आज की युवा पीढ़ी की ओर से दिलाए जाने का यह अवसर है।

विनम्र श्रद्धांजलि सहित

आपका संपादक

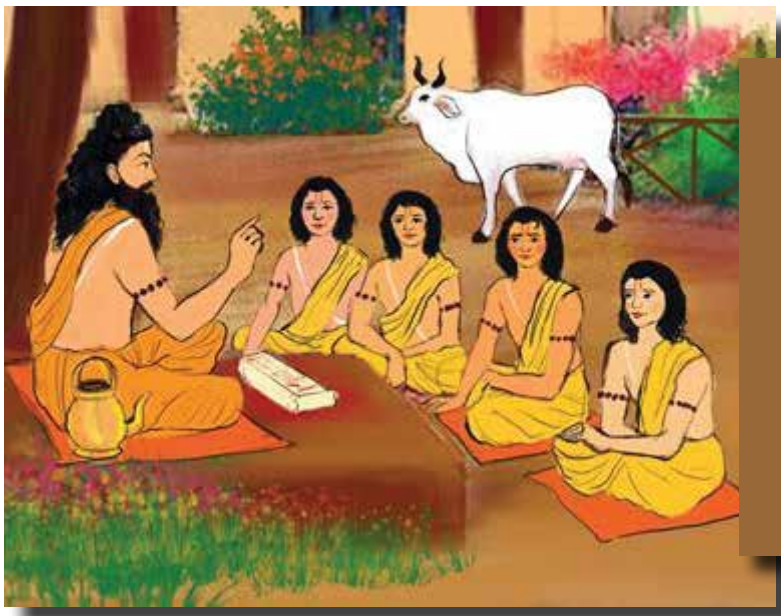

शिक्षा की भारतीय परम्परा

■ डा. राजशरण शाही

ब्रिगेडियर जनरल अलेक्जेंडर वाकर, जिसने भारत में 1780-1810 तक ईस्ट इंडिया कंपनी में नौकरी की थी, उसने लिखा है कि किसी समाज में शिक्षा को शायद इतना महत्व नहीं दिया जाता था, जितना भारत में। भारतीय अपने बच्चों को विद्यार्जन कराने के लिए धन, कुल गौरव और जाति आदि सभी प्रकार के अभिमानों का त्याग कर सकते थे। उन्होंने साक्ष्य देते हुए कहा कि विद्यार्जन के प्रति असीम अनुराग केवल ब्रह्मण वर्ग का ही वैशिष्टय नहीं था, अपितु यह लगन प्रत्येक भारतीय में गहराई तक बसी हुई थी, उसी प्रेरणा ने उनकी शिक्षा प्रणाली को जन्म दिया है। कडप्पा के समाहर्ता (कलेक्टर) जी. एम. ओगिल्वी के अनुसार भारतीयों का विद्या के प्रति इतना गहरा अनुराग था कि कोई भी कठिनाई उन्हें विद्याध्ययन से रोक नहीं पाती थी। छोटे-छोटे भारतीय बच्चे अपने जन्म स्थान पर विद्यार्जन की सुविधा न होने के कारण दस से सौ मील दूर तक पैदल जाकर किसी अनजाने गांव में विद्यार्जन करते थे और लंबे कालखंड में एक बार भी अपने गांव नहीं जाते थे। वहां नित्य प्राप्त होने वाली भिक्षा ही उनका एकमात्र सहारा होती थी। यह भिक्षा समाज के लोग हर्ष के साथ सहज एवं श्रद्धा भाव से देते थे। यह शिक्षा के प्रति आम भारतवासियों के अनुराग को प्रकट करता है। निर्धनता विद्यार्जन के मार्ग में बाधक नहीं थी। शिक्षा व्यवस्था समाज पोषित हुआ करती थी। जे. एम. लुडलो अपनी पुस्तक ब्रिटिश इंडिया में लिखते हैं कि प्रत्येक हिन्दू ग्राम में, जिसने अपने स्वत्व को थोड़ा भी कायम रखा है, वहां शिक्षा की प्रारंभिक व्यवस्था अवश्य रहती थी। एक भी बच्चा ऐसा नहीं होता था जो लिखना-पढ़ना और हिसाब लगाना न जानता हो। विशेषतः गणित में तो वह बहुत ही प्रवीण होते थे।

भारत में शिक्षा का अत्यधिक पुराना इतिहास रहा है। जब दुनिया ने विश्वविद्यालय की कल्पना नहीं थी, तब भारत में तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला आदि विश्वविद्यालय ज्ञान, विज्ञान और अध्यात्म की शिक्षा के लिए लोकप्रसिद्ध थे। विश्व के कोने-कोने से शिक्षार्थी अपनी ज्ञान पिपासा को शांत करने के लिए यहां आते थे। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययन और अध्यापन का कार्य किया था। यहां से वापस जाते समय वह अपने साथ बहुत सारी पुस्तकें ले जा रहा था। रास्ते में उसको कोई असुविधा न हो, इस दृष्टि से उसके सहयोग के लिए कुछ विद्यार्थी भी उसे छोड़ने गए थे। नदी पार करते समय अचानक तेज तूफान आ गया। नाविक ने

यात्रियों से सामान फेंकने की अपील की, जिससे नाव में बैठे लोगों को सुरक्षित तट तक पहुंचाया जा सके। लेकिन भारत की वह ज्ञान सम्पदा, जिसे लेकर ह्वेनसांग चीन जा रहा था, उसे बचाने के लिए भारतीय विद्यार्थियों ने स्वयं पानी में छलांग लगा दी। आज दुनिया में अपनी ही नहीं, बल्कि दूसरे की ज्ञान सम्पदा का पेटेंट करा कर उसका व्यापार किया जा रहा है, जबकि भारत ने मानवता के कल्याण के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर इस ज्ञान सम्पदा को दुनिया के सामने ले जाने का प्रयास किया।

ह्वेनसांग का यह विवरण भारतीयों का ज्ञान के प्रति अनुराग तथा विश्व कल्याणार्थ उसके प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण का परिचायक है। ऐसे अनेक प्रसंग हैं, जिससे यह प्रमाणित होता है कि प्रत्येक काल खंड में ज्ञान प्राप्ति की परंपरा भारत में विद्यमान रही है। भारतीय ऋषियों ने तो यहां तक कह दिया कि इस पृथ्वी पर ज्ञान के समान पवित्र अन्य कोई वस्तु नहीं है। इसीलिए सभी प्रकार के जातिगत और पांथिक आग्रहों से मुक्त होकर इसे ग्रहण करने की परंपरा दिखाई देती है। नालंदा विश्वविद्यालय बौद्ध शिक्षा का विश्व प्रसिद्ध केन्द्र था, जो परवर्ती गुप्त शासकों के अनुदान से संचालित हो रहा था। गुप्त शासक शैव और वैष्णव धर्म के अनुयायी थे। इसके बावजूद दो सौ ग्राम विश्वविद्यालय के संचालन के लिए परवर्ती गुप्त शासकों ने अनुदान के रूप में दिए थे। राज्यपोषित होने के बावजूद विश्वविद्यालय पूरी तरह से स्वायत्त होते थे। उनके संचालन में किसी प्रकार का राजकीय हस्तक्षेप नहीं था। एक बार परवर्ती गुप्त शासक नरसिंहगुप्त बालादित्य ने विश्वविद्यालय में प्रधान भिक्षु के रूप में प्रवेश की इच्छा व्यक्त की, तो तत्कालीन कुलपति ने उसे प्रधान भिक्षु की जगह सामान्य भिक्षु के रूप में प्रवेश के लिए अनुमति प्रदान की। इस प्रकार शिक्षालय पूरी तरह स्वायत थे। ज्ञान के प्रसार में किसी प्रकार का कोई भेद नहीं किया जाता था।

भारत में ज्ञान को मनुष्य का तृतीय नेत्र माना गया है। जो खुली आंखों से दिखाई दे रहा है, केवल उसके रहस्यों को जानना भारत की शिक्षा का अभीष्ट नहीं रहा। भौतिक जीवन के इतर जो जीवन है, उसे भी जानने की चेष्टा भारतीय शिक्षा परंपरा में दिखाई देती है। भारत में जानने की परंपरा केवल शब्द की परंपरा तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसका विस्तार तत्व बोध की परंपरा के रूप में दिखाई देता है। इसीलिए 'वादे-वादे जायते' तत्व बोध का उद्घोष आचार्य करते हैं। जानने की इतनी व्यापक दृष्टि के कारण अन्नमय कोष से लेकर आनंदमय कोष का विकास शिक्षा के उद्देश्य के रूप निर्धारित किया गया था। मानव जीवन के जो श्रेष्ठ मूल्य हैं, उसे प्राप्त करने की व्यापक योजना भारतीय शिक्षा परंपरा में दिखाई देती है। भारतीय शिक्षा परंपरा जीवन में सफलता के साथ ही साथ सुफलता प्राप्त करने की प्रेरणा देती है। यही कारण है कि कलिंग विजय के पश्चात अशोक धम्म विजय का उद्घोष करता है। छान्दोग्य उपनिषद में तो स्वाध्याय को धर्म का एक प्रमुख स्तम्भ माना गया है।

मैं कौन हूँ? मेरे पूर्वज कौन थे? उनके जीवन का ध्येय क्या था? भारत में शिक्षा की परंपरा समाज जीवन के समसामयिक प्रश्नों के साथ इन प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करते हुए दिखाई देती है। इस अर्थ में शिक्षा की भूमिका व्यक्ति को उसके अतीत से जोड़ने की भी रही है। अतीत से वर्तमान को अर्थ मिलता है। इसलिए अंतरराष्ट्रीय शिक्षा आयोग ने भी इस बात पर बल देते हुए कहा है कि शिक्षा की जड़ें उसकी संस्कृति में गहराई से जुड़ी होनी चाहिए तथा उसकी प्रतिबद्धता विकास के प्रति होनी चाहिए। किसी भी समाज की संस्कृति उसकी शिक्षा व्यवस्था को प्राणवान बनाती है। सांस्कृतिक चेतना का जागरण शिक्षा की भारतीय परंपरा का महत्वपूर्ण आयाम रहा है। भारत की सांस्कृतिक चेतना व्यष्टि को समष्टि के साथ जोड़ती है। आत्मनियंत्रण-आत्मशोधन-आत्मपरिष्कार के माध्यम से स्व को सर्वस्व के रूप में विकसित करना भारत की सांस्कृतिक चेतना का मूल स्वर है। जो मैं हूं, वही तुम भी हो, मेरे और तुम्हारे बीच जो भेद है, वह बाह्यगत है। तात्विक दृष्टि से सब एक हैं। समता और समरसता का यह भाव भारत के तत्व चिंतन का आदर्श है। ऋषियों की सतत साधना से प्राप्त तत्वज्ञान को समाज तक पहुंचाने और लोक-व्यवहार का हिस्सा बनाने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

शिक्षा के माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक सरोकारों को बढ़ाने में पाठ्यक्रम की महत्वपूर्ण भूमिका को भी देखा जा सकता है। गुरुकुल से लेकर अंग्रेजों के आगमन तक, शिक्षा के पाठ्यक्रमों का अवलोकन करने पर ध्यान में आता है कि पाठ्यक्रम जीवन केंद्रित होते थे और सूचनाओं के अनावश्यक बोझ से मुक्त थे। इसके कारण शिक्षा तनाव एवं दबाव उत्पन्न करने के स्थान पर प्रभाव उत्पन्न करने की प्रक्रिया के रूप में कार्यरत थी। इसीलिए भारत शिक्षा की परंपरा "सा विद्या या विमुक्तये" का उद्घोष करने में समर्थ हो सका। ज्ञान के सुगम तथा सुसंबद्ध संचरण के लिए इसका विभाजन विषय की सीमाओं में तो दिखाई तो देता है, लेकिन यह विभाजन इतना लचीला था कि विद्यार्थी के अंदर विषय दृष्टि के साथ ही साथ विश्व दृष्टि के विकास करने में भी यह शिक्षा सफल थी।

स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि छात्र में अंतर्निहित क्षमता को बाहर लाना शिक्षा का उद्देश्य है। शिक्षा इस उद्देश्य को प्राप्त करने में तभी समर्थ होगी, जब मूल्यांकन की प्रक्रिया सहज और स्वाभाविक होगी। वर्ष भर अर्जित ज्ञान, कौशल और चरित्र का मूल्यांकन कुछ घंटों में करने का प्रयास अपने आप हास्यास्पद है। मूल्यांकन की यह पद्धति अगर ज्ञान का कुछ सीमा तक मूल्यांकन कर भी सकती है तो चरित्र निर्माण का पक्ष पूरी तरह से उपेक्षित रहता है। प्राचीन भारत की शिक्षा की जो परंपरा थी, उसमें सहज और स्वाभाविक परिस्थिति में मूल्यांकन का कार्य सम्पन्न होता था। पुस्तकीय ज्ञान के आधार पर मूल्यांकन की व्यवस्था ने शिक्षा में रटने की आदत को बढ़ावा दिया है। गुरुकुल में छात्र का मूल्यांकन केवल उसके द्वारा सीखे हुए ज्ञान के आधार पर ही नहीं होता था, बल्कि सीखे ज्ञान के आधार पर उसके व्यवहार में हुए परिवर्तनों का मूल्यांकन सहज और स्वाभाविक वातावरण में सम्पन्न होता था।

भारत की शिक्षा व्यवस्था में ज्ञान के साथ ही साथ कौशल के विकास की बहुआयामी योजना दिखाई देती है। यह शिक्षा विद्यार्थियों को केवल पुस्तकीय संसार का रसास्वादन नहीं कराती थी, बल्कि उसे प्रकृति के रहस्यों से भी परिचित कराती थी। प्रकृति के वातावरण में विद्यार्थी केवल ज्ञानार्जन ही नहीं करता था, बल्कि प्रकृति के साथ प्रत्यक्ष संवाद भी करता था, जिससे प्रकृति के संवेदनाओं की उसे गहरी अनुभूति प्राप्त होती थी। इस अनुभूति के कारण उसके अंदर परस्परानुकूलता के भाव जागृत होते थे। मानव और पर्यावरण के सह-अस्तित्व की इस चेतना के कारण ही प्रकृति को आराध्या के रूप में स्वीकार किया गया है। पश्चिम के चिंतन ने प्रकृति को मानव के उपभोग के एक साधन के रूप में देखा है, जबकि भारतीय चिंतन में प्रकृति साधन नहीं, सौभाग्य है।

शिक्षा की औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों धाराएं समानांतर रूप से भारतीय शिक्षा में प्रवाहित होती दिखाई देती है। शिक्षा की लिखित परंपरा के साथ ही साथ वाचिक परम्परा को समाज जीवन में समान महत्व प्राप्त था। कई बार शिक्षा की अनौपचारिक परंपरा औपचारिक लोक जीवन को अधिक गहराई के साथ प्रभावित करती हुई दिखाई देती है। दोनों के समेकित विकास के कारण ज्ञान और शील का मानव जीवन में प्रकटन व्यापक रूप से देखा जा सकता है। शिक्षा के औपचारिक साधन के रूप में शिक्षालय अपनी भूमिका का निर्वहन कुशलतापूर्वक तो करते ही थे। गुरुकुल में शिक्षा की पूरी योजना ही शैक्षिक परिवार की संकल्पना पर आधारित थी। इसी कारण शिक्षा में स्नेह, सहजता, सहकार, संस्कार और सृजन का व्यापक समन्वय दिखाई देता है।

गुरु और शिष्य परंपरा का आदर्श भी परिवार जीवन के श्रेष्ठ मूल्यों पर प्रतिष्ठित थे। यह शिक्षा अधिकार के स्थान पर कर्तव्य बोध की भावना से अनुप्राणित थी। शिक्षा में दंड आधारित अनुशासन के स्थान पर आत्मानुशासन पर बल था, इसलिए यह शिक्षा तनाव एवं दबाव के स्थान पर मानव जीवन में प्रेरणा और प्रभाव उत्पन्न करने में सफल थी। शिक्षालय की प्रत्येक गतिविधि जीवन से जुड़ी होने के कारण मानव में उत्साह, उमंग और ऊर्जा का संचार करती थी। ज्ञान का जीवन से जुड़ाव के कारण शिक्षालय विद्यार्थी में उत्साह, उमंग और ऊर्जा का संचार करने में सफल थे। शिक्षा ज्ञान के सृजन के साथ ही साथ जीवन के प्रति दृष्टिकोण का भी निर्माण करती थी। इसीलिए शिक्षा जीवन के लिए और जीवन लोक मंगल के लिए का उद्घोष शिक्षा का मूल स्वर बन सका। "शिक्षार्थ आइए और सेवार्थ जाइए", यह शिक्षालयों के लिए केवल नारा नहीं, बल्कि यह उनका संकल्प था।

वर्तमान समय में विश्व के सामने जो चुनौतियां हैं, उनके समाधान के लिए शिक्षा का नियोजन इस प्रकार से करना होगा जो केवल सूचना केन्द्रित न होकर संवेदना केंद्रित भी हो। इसलिए शिक्षा को आविष्कार के साथ ही साथ व्यक्ति के परिष्कार और संस्कार के लिए प्रतिबद्ध होना होगा। अंतरराष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1995-96) ने "लर्निंग टू नो, लर्निंग टू डू" के साथ ही साथ "लर्निंग टू लिव टुगेदर" और "लर्निंग टू बी" को भी अधिगम के आधार स्तम्भ के रूप में रेखांकित किया है। भारत की जो परंपरागत शिक्षा है, वह ज्ञान और कौशल के साथ ही साथ सह-अस्तित्व के भाव से अनुप्राणित है। व्यक्ति को समष्टि से जोड़ने की जीवन दृष्टि विकसित करना शिक्षा का अभीष्ट है। जीवन की यह दृष्टि प्राणिमात्र तक सीमित न होकर वनस्पतियों की संवेदना से भी स्पंदित है। इसीलिए दुनिया के सामने अंधाधुंध उपभोग के स्थान पर मर्यादित जीवन व्यवहार का आदर्श रखने में भारत समर्थ हो सका। आज उसी परंपरा को वैश्विक शिक्षा में प्रतिष्ठित करने का आह्वान अंतरराष्ट्रीय शिक्षा आयोग अपने प्रतिवेदन के माध्यम से कर रहा है। ऐसे में सभी का दायित्व है कि उन आदर्शों पर भारतीय शिक्षा व्यवस्था को प्रतिष्ठित करने के लिए सभी संकल्प भाव से आगे आएं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को तत्वनिष्ठा के साथ लागू करना, इस दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास हो सकता है। ■

(लेखक, अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं।)

भारत की ज्ञान परंपरा

■ डा. रामानंद पांडेय

भारतीय समाज में शिक्षा को सबसे महत्वपूर्ण विषय माना जाता रहा है। इसका कारण भारतीय समाज का ज्ञान और शोध आधारित होना है। भारत में प्राचीन काल से लेकर आज तक ज्ञान और अन्वेषण को बहुत सम्मान की दृष्टि से देखा जाता रहा है। यह भारत की ज्ञान परंपरा ही है, जिसने भारत की कीर्ति को विश्व के कोने-कोने तक पहुंचाया। भारत के नालंदा और तक्षशिला संस्थानों की कीर्ति वैश्विक ज्ञान सृष्टि में फैली हुई थी। जितने संस्थान प्रसिद्ध थे, वैसे ही उसके शिक्षक भी थे। सभी शिक्षक अपने-अपने विषय के ज्ञाता थे। यह शिक्षक ही थे जो गायन की परंपरा को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में आरोपित करते थे।

वर्तमान समय में भी जब भी भारतीय शिक्षा संस्थानों और शिक्षा के मौलिकता की चर्चा होती है तो उदाहरण अतीत के उन स्वर्णिम अध्यायों से ही आता है, जो यह भी बताता है कि स्वतंत्रता के इतने वर्ष बाद भी हम वहां नहीं पहुंच पाएं हैं जहां से चले थे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि एक समाज के रूप में भारत ने हज़ारों झंझावात देखे, संस्थानों को उजाड़ते देखा, तंत्र को बदलते देखा, लेकिन ज्ञान परम्परा के सूत्र किसी न किसी रूप में लगातार गतिमान रहे। अगर आवश्यकता थी तो उनको पहचानने और शिक्षा की व्यवस्था में समय के अनुसार ढालने की, लेकिन इसे संकुचाहट कहे या पश्चिम के प्रति अत्यधिक आकर्षण कि ऐसा नहीं कर सके। वह भी नहीं कर सके जो भारत के लोगों ने अंग्रेजी शासन के समय कर दिखाया था।

वर्तमान समय में लाखों की संख्या में छात्र विदेशी विश्वविद्यालयों में शिक्षा के लिए जाते है। प्रश्न यह है कि स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी उस अतीत के कुछ अंश को अभी तक प्राप्त क्यों नहीं कर पाएं हैं? स्वतंत्रता के बाद कई सारे शैक्षणिक आयोग बने मगर ज्यादातर लागू न कर पाने के कारण अपनी परिणीति तक नहीं पहुंच पाए या तो वह केवल पश्चिमी देशों की शिक्षा प्रणाली के अनुसरण करने के कारण भारतीय समाज से संवाद स्थापित नहीं कर पाए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने पहली बार शिक्षा की भारतीय ज्ञान परंपरा के उज्जवल पक्ष को इतनी प्रमुखता से देशवासियों के सामने रखा।

राष्ट्रीय शिक्षा आन्दोलन

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन केवल एक राजनीतिक आंदोलन नहीं था। अतः इसका लक्ष्य केवल राजनीतिक स्वतंत्रता हो यह भी नहीं था। भारत के चिंतकों ने एक गंभीर चिंतन के पश्चात भारत की स्वतंत्रता की इच्छा को सामने रखा था। यही कारण है कि समाज की इच्छाएं जितने प्रकार से व्यक्त हो सकती हैं, उतनी प्रकार से राष्ट्रीय आंदोलन में भी व्यक्त हुई। चाहे वह राजनीतिक धारा के रूप में हो या आर्थिक धारा के रूप में या सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए या किसी और धारा के रूप में। शिक्षा का आंदोलन भी इसी का एक प्रकार था, जिसे गोपाल कृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, रवीन्द्र नाथ टैगोर और महात्मा गांधी जैसे विचारकों ने भारतीय समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप भारतीय मानस तैयार करने के लिए किया।

राष्ट्रीय शिक्षा आन्दोलन, भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की धारा से निकलने वाला वह आन्दोलन था, जिसका उद्देश्य राष्ट्रवादियों को अंग्रेजी शिक्षा के विकल्प के रूप में, भारतीय मूल्यों पर आधारित शिक्षा देने का प्रयास करना था। इसका उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से लोगों में देशभक्ति का संचार करना भी था, ताकि लोगों में भारतीय चिंतन की समझ विकसित हो सके और भारतीय व्यवस्था पर विश्वास हो सके। इस आन्दोलन के अंतर्गत डी.ए.वी. आंदोलन, गुरुकुल कांगड़ी आंदोलन, शांति निकेतन की स्थापना, बंग-भंग विरोधी आंदोलन द्वारा राष्ट्रीय विद्यालयों की श्रृंखला का जन्म, असहयोग आंदोलन के समय विद्यापीठों का उद्भव, अरविंद आश्रम से जुड़े विद्यालय आदि स्थापित हुए। देश के अनेक मार्गों में राष्ट्रीय विद्यालयों की श्रृंखला आरम्भ हुई, जिससे छात्रों में राष्ट्र के लिए राष्ट्रीयता का भाव विकसित हुआ।

यह श्रृंखला स्वतंत्रता मिलने तक चलती रही। कई प्रांतों ने गांधी जी के विचारों पर आधारित बुनियादी शिक्षा के मूल्यों

को अपनाने का प्रयास किया, मगर शासकीय नियामकों का ग़ैर लचीलापन और तत्कालीन भारतीय शासन की भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रति उदासीनता ने उन्हें बहुत आगे बढ़ने नहीं दिया। भारतीय समाज का चिंतन और ज्ञान आधारित चिंतन इन संस्थाओं के विकास में दिखा। यह भारतीय चिंतन ही था, जिसने यह पाया कि अगर अंग्रेजी शासन से लड़ना है तो उनके जैसा सोच कर और उन्हीं के संस्थानों पर निर्भर होकर नहीं हो सकता है। इसलिए भारतीय समाजिक चिंतकों ने अनेक वैकल्पिक संस्थाएं बनाई, जिनका उद्देश्य, अंग्रेजी व्यवस्था पर निर्भरता कम करना था। यह संस्थाएं अपने बदले स्वरूप में अभी भी देश में मौजूद है। इनका उद्देश्य बदला गया है, मगर इनका स्वरूप और ऐतिहासिकता अभी भी इनके साथ है।

भारतीय शिक्षा नीति-2020

भारतीय समाज को लगभग 75 वर्ष तक भारतीय सामाजिक मूल्यों पर आधारित ज्ञान परंपरा पर चिंतन और क्रियान्वयन की प्रतीक्षा करनी पड़ी। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 थी, जिसने इस बात को समझा कि भारतीय समाज की पूर्ण क्षमता के विकास के लिए आवश्यक है कि भारतीय सामाजिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा पद्धति का विकास हो। इस शिक्षा पद्धति का उद्देश्य पुरातन होगा, ऐसा नहीं है। शिक्षा पद्धति में वह सारे आधुनिक अवयव होंगे, जिनका होना किसी भी प्रणाली के लिए आवश्यक है। लेकिन उनका अनुपालन और उनकी आवश्यकता का चिंतन भारतीय सामाजिक ढांचे के अनुरूप होगा।

भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषता इसकी गतिशीलता है। यही गतिशीलता भारतीय समाज को मिली है। यही कारण है कि इतने वर्षों बाद जब भारतीय ज्ञान परंपरा की चर्चा हुई तो बहुत कम समय में ही इसने गति पकड़ ली। भारतीय ज्ञान परम्परा का ध्यान करते हुए यह याद रखना चाहिए कि भारत ने न केवल ज्ञान का प्रसार किया, अपितु बाह्य ज्ञान का अंगीकार भी किया और इसी लचीलेपन ने भारत को ज्ञान के केंद्र के रूप में स्थापित किया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति जब आज धरातल पर उतर रही है तो इसी लचीलेपन को ध्यान में रखना होगा कि भारत सामूहिकता और विविधता के अनुसार इसका क्रियान्वयन किस प्रकार करेगा। लगातार ऐसे समाचार आ रहे हैं कि कई विदेशी विश्वविद्यालय भारत में अपना परिसर खोल रहे है। यह भारत की शिक्षा नीति की सफलता ही है, जिससे लोगों में यह विश्वास आ रहा है कि आधुनिक, लेकिन भारतीय ज्ञान परम्परा आधारित शिक्षा देने के लिए भारत आना होगा।

गत कई दशकों से भारत के लाखों छात्र विदेशी विश्वविद्यालयों में पढ़ने जाते थे, जिसके कारण न केवल भारतीय आर्थिक हित होते प्रभावित होते रहे, अपितु भारत के सामाजिक धन की भी क्षति हो रही थी। यह किसी भी दृष्टिकोण से उचित नहीं था, लेकिन तत्कालीन नीति निर्माताओं ने उस तरफ उतना ध्यान नहीं दिया, जितनी आवश्यकता थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत विदेशी विश्वविद्यालयों को भारत में आमंत्रित करने और उनको भारतीय नियमों के अंतर्गत परिसर स्थापित कराना, भारतीय शिक्षा जगत के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। हाल ही में देश के शिक्षा मंत्री ने मुंबई में एक साथ पांच परिसर का उद्घाटन किया जो भारत बढ़ती हुई शैक्षणिक शक्ति के विषय में बताता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का एक महत्वपूर्ण अवयव भारत की भाषाएं है। भारत की हर भाषा अपने में एक कहानी लिए हुए। सभी कहानियों का एक इतिहास और भूगोल है, लेकिन वह आपस में जुड़ी हुई और एक-दूसरे की पूरक है। सभी भाषाएं भारत के सांस्कृतिक वैभव की द्योतक रही है। मगर स्वतंत्रता के बाद भी इन भाषाओं के संवर्धन और आपसी सामंजस्य पर उतना कार्य नहीं हो हुआ, जितनी आवश्यकता थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अन्तर्गत केंद्र सरकार लगातार सभी भाषाओं के संवर्धन के लिए समान प्रयास कर रही है। केंद्र सरकार देश के सभी नागरिकों को उनकी मातृ भाषा में शिक्षा देने के लिए भी प्रयासरत है। भारतीय ज्ञान परंपरा अतीत का ज्ञान भर नहीं है, यह अतीत से आरम्भ अवश्य होता है, मगर यह ज्ञान परंपरा अभी भी चलायमान हैं। यह जड़ नहीं, अपितु चेतन है। भारत का ज्ञान, भारत के समाज के विकास की वह प्रक्रिया है, जो जारी है। इसलिए इसको सम्पूर्ण रूप में समझना होगा। यह भी समझना होगा कि भारत का ज्ञान, केवल विषय सामग्री का ज्ञान नहीं है। इसीलिए यह किसी काल पर आधारित नहीं है। यह प्रक्रिया आधारित ज्ञान है, चाहे वह भारत का 'संवाद' आधारित ज्ञान प्राप्त करने की विधा हो या 'कथा' आधारित ज्ञान प्राप्त करने की विधा, यह हर काल में उतनी ही प्रासंगिक रही है, जितनी आज भी है। ■

(लेखक, सीपीआरजी के निदेशक है।)

आपातकाल की 50वीं वर्षगांठ मीसाबंदियों के साथ मनाएगी अभाविप

आगामी कार्ययोजनाओं को दिया गया अंतिम रूप

■ अजीत कुमार सिंह

लोकतंत्र को कलंकित करने वाले आपातकाल की पचासवीं वर्षगांठ पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) कार्यकर्ता आगामी 25 जून से देश के विभिन्न विश्वविद्यालय परिसरों में पूर्व कार्यकर्ताओं एवं आपातकाल के दौरान आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था अधिनियम (मीसा) कानून में जेल की सजा काटने वाले मीसा बंदियों से मिलकर संवाद, रैली एवं स्मरण कार्यक्रम करेंगे। यह कार्यक्रम आगामी दो वर्षों तक जारी रहेगा। इसके साथ ही भगवान बिरसा मुंडा और रानी अब्बक्का के संघर्ष एवं सम्मान से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों के साथ ही अभाविप के शिल्पकार यशवंतराव केलकर की जन्म शताब्दी के अवसर पर पूर्व कार्यकर्ता एकत्रीकरण, अभ्यास वर्ग, भाषण, प्रदर्शनी एवं साहित्य निर्माण जैसे कार्यक्रमों का आयोजन देशभर में किया जाएगा। संघ शताब्दी वर्ष के अवसर पर अभाविप अपने संगठनात्मक कार्य विस्तार को भी गति देगी।

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में संपन्न अभाविप

की तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक में गत वर्ष के कार्यों की समीक्षा एवं आगामी कार्ययोजना पर विचार-विमर्श किया गया। गत 29 मई से 31 मई के मध्य इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के कृषि मंडपम में आयोजित बैठक में देश के सभी 46 प्रांतों के 478 प्रतिनिधियों के साथ ही मित्र राष्ट्र नेपाल के प्रतिनिधि भी उपस्थित रहे।

बैठक का शुभारंभ गत 29 मई को राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही, महामंत्री वीरेन्द्र सोलंकी एवं संगठन मंत्री आशीष चौहान ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया। बैठक के प्रास्ताविक सत्र को संबोधित करते हुए अभाविप राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही ने कहा कि पहलगाम में हुआ आतंकी हमला मानवता के इतिहास को कलंकित करने वाला था। भारत अहिंसा का पुजारी है, लेकिन हिंसा का प्रतिकार करने की प्रतिबद्धता का परिचय भारतीय सेना ने आपरेशन सिंदूर के माध्यम से दिया। शिक्षा क्षेत्र की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में कुलपतियों की नियुक्ति में विलंब होना भारत के भविष्य की उपेक्षा है। इसलिए इस विषय में गंभीरता से ध्यान देना होगा। भारत में शिक्षा का उद्देश्य अन्नमय कोश से आनंदमय कोश तक जाता है। ऐसे में शिक्षालय को रचनात्मक और आकर्षक बनाना होगा, जिससे विद्यार्थी अपने सर्वांगीण विकास की दिशा में आगे बढ़ सके। अभाविप के कार्यों की जानकारी देते हुए राष्ट्रीय महामंत्री डा. वीरेंद्र सिंह सोलंकी ने कहा कि विद्यार्थी परिषद की कार्यप्रणाली निरंतर नए सूत्रों को समाहित कर समाज-जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने की ध्येय यात्रा में आगे बढ़ रही है। लेकिन शिक्षा क्षेत्र में छात्रों को एक महत्वपूर्ण हितधारक के रूप में उनके मुद्दों को प्रमुखता से उठाते हुए तथा वर्तमान परिदृश्य में युवानुकूल बदलाव लाने के लिए एक साथ प्रयास करने चाहिए।

बैठक में अभाविप के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री गोविंद नायक ने नैमित्तिक और विशेष कार्यक्रम समीक्षा सत्र को संबोधित करते हुए अभाविप द्वारा वर्ष भर चलाए गए कार्यक्रमों की समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने कार्यक्रम से जुड़े विभिन्न तकनीकी पहलुओं से कार्यकर्ताओं को परिचित कराया। बैठक में 'वर्तमान परिदृश्य एवं हमारी भूमिका' पर आयोजित सत्र में देश के वर्तमान परिदृश्य पर चर्चा की गई। 'शैक्षिक विषयों पर अभाविप की भूमिका' विषय पर आयोजित सत्र में निजी विश्वविद्यालय में शुल्क बढ़ोत्तरी, विभिन्न प्रांतों में छात्राओं के साथ बढ़ता यौन उत्पीड़न, कोचिंग संस्थानों की बढ़ती मनमानी, विभिन्न परीक्षाओं के पेपर लीक की घटनाएं जैसे गंभीर विषय पर विचार-विमर्श किया गया।

विविध आयाम योजना पर आयोजित सत्र में अभाविप के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री एस. बालकृष्ण ने अभाविप के विभिन्न आयाम एवं गतिविधि के कार्यों से संबंधित आगामी योजनाओं पर पर चर्चा की। जबकि विविध गतिविधि योजना में अभाविप के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री देवदत्त जोशी ने संबंधित गतिविधियों को सामने रखा। छात्रा कार्य विषय पर आधारित सत्र में अभाविप की अखिल भारतीय छात्रा कार्य प्रमुख मनु शर्मा कटारिया ने छात्राओं की सहभागिता, छात्रा कार्य की टोली इत्यादि विषयों की विस्तार से जानकारी दी। बैठक के दौरान अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान ने पीपीटी के माध्यम से प्रांतशः संगठनात्मक कार्य, गतिविधि, सदस्यता, आंदोलन, कार्यक्रम इत्यादि की समीक्षा की। साथ ही पांच वर्षों की तुलना में इकाई, महाविद्यालय इकाई सदस्यता आदि में प्रांत की वर्तमान स्थिति का अवलोकन करते हुए प्रांत में इकाई गठन पद्धति, जिला समिति, सदस्यता आदि की योजना पर चर्चा की।

आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा

तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक में आगामी वर्ष के कार्यक्रमों एवं अभियानों की रूपरेखा निर्धारित की गई। भगवान बिरसा मुंडा की 150 वीं जन्म

जयंती वर्ष के अवसर पर उनके जीवन एवं योगदान पर आधारित विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा, जिसमें अखिल भारतीय स्तर पर छात्रावासों का सर्वेक्षण, पुस्तकों का प्रकाशन तथा उनके जन्मस्थल की मिट्टी से पूजन एवं यात्रा जैसे कार्यक्रम शामिल होंगे। इसी प्रकार रानी अबक्का की 500वीं जयंती के उपलक्ष्य में विविध कार्यक्रमों के साथ ही। आपातकाल की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर 25 जून से आगामी दो वर्षों तक विश्वविद्यालय परिसरों में पूर्व कार्यकर्ताओं एवं मीसा बंदियों के साथ संवाद, रैली एवं स्मरण कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

चार प्रस्ताव पारित

अभाविप की राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक में कुल चार प्रस्ताव पारित किए गए। यह प्रस्ताव देश में 'कोचिंग संस्थानों पर नियंत्रण एवं नियमन हो सुनिश्चित', 'कुलपतियों की नियुक्ति में विलंब एवं विवाद से विश्वविद्यालयों में बढ़ती अस्थिरता चिंतनीय', 'भारत की आंतरिक सुरक्षा हेतु सरकार की तत्परता एवं समाज की सजगता आवश्यकता' एवं वैश्विक 'भू-राजनीतिक व्यवस्था में भारत की बहुआयामी पहल' विषयों पर केंद्रित हैं। इसके अलावा कार्यकारी परिषद से पहले आयोजित केंद्रीय कार्यसमिति बैठक में 'भारतीय स्वाभिमान और शौर्य का प्रतीक-ऑपरेशन सिंदूर अभिनंदनीय' विषय पर प्रस्ताव पारित किया गया।

पुस्तक, पत्रिका, विवरणिका एवं पोस्टर का विमोचन

बैठक के दौरान नवंबर' 2024 से अप्रैल' 2025 के मध्य अभाविप द्वारा किए गए विभिन्न कार्यक्रमों, अभियानों एवं आंदोलनों से सम्बंधित वीडियो का प्रदर्शन भी किया गया। इसके साथ ही कई पोस्टर, पुस्तक एवं पत्रिका का विमोचन भी हुआ, जिसमें राष्ट्रीय कला मंच विवरणिका, राष्ट्र रंग पोस्टर, अभाविप अवध प्रांत के सामाजिक अनुभूति के अनुभव संग्रह पत्रिका, अभाविप के सेवा कार्यों पर केंद्रित पुस्तक मणिपुर यूथ एट टाइम्स ऑफ क्राइसिस, रानी दुर्गावती पर केंद्रित पुस्तक, हरियाणा प्रांत की यशवंत स्मृति पत्रिका, काशी प्रांत का परिसर चलो पत्रक, सृष्टि मंथन राष्ट्रीय पर्यावरण कॉन्क्लेव पोस्टर, थिंक इंडिया नेशन सिम्पोजियम ऑन लेंडमार्क जजमेंट ऑफ 2024 बुकलेट, सविष्कार पोस्टर, कानपुर प्रांत की वार्षिक योजना एवं समीक्षा पुस्तिका, स्वास्थ्य महाकुंभ इंटर्नशिप ब्रोशर, जिज्ञासा नेशनल कांफ्रेस पोस्टर, अम्बुवाची मेला सेवा इंटर्नशिप, रामदेवरा सेवा इंटर्नशिप, रथयात्रा सेवा इंटर्नशिप पोस्टर, सोशल मीडिया इंटर्नशिप, थिंक इंडिया सम्मेलन, पूर्वोत्तर छात्र-युवा संसद रिपोर्ट, जनजातीय छात्र संसद पुस्तिका इत्यादि शामिल हैं। बैठक के अंतिम दिन "भाषाओं के माध्यम से भावी भारत" विषय पर भाषाविद् चमू कृष्ण शास्त्री का विशेष व्याख्यान भी हुआ, जिसमें उन्होंने भारतीय भाषाओं के संरक्षण और उनके व्यापक उपयोग के लिए पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया। राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक से पहले गत 28 मई को केन्द्रीय कार्यसमिति, आयाम, कार्य गतिविधि एवं कोषाध्यक्ष की संयुक्त बैठक भी आयोजित की गई।

भव्य प्रदर्शनी ने किया आकर्षित

बैठक के दौरान एक भव्य प्रदर्शनी भी लगायी गई, जिसका उद्घाटन छत्तीसगढ़ के उप-मुख्यमंत्री अरुण साव ने किया। प्रदर्शनी स्थल का मंडप छत्तीसगढ़ की ग्रामीण और जनजातीय जीवन-शैली को प्रतिबिंबित करता हुआ दिखाई दिया। हस्तनिर्मित कलाकृतियां, ढोकरा कला की मूर्तियां, स्थानीय वाद्य यंत्र, मां सरस्वती की प्रतिमा और एक भव्य चित्र स्थली इस मंडप की विशिष्टता रही। प्रदर्शनी नौ विषयों पर आधारित थी, जिनमें भगवान राम के ननिहाल से लेकर पंडवानी, रामनामी परंपरा और छत्तीसगढ़ की लोक परंपरा का इतिहास सम्मिलित था। प्रदर्शनी के अन्य खंडों में अभाविप की छह माह की प्रमुख गतिविधियों जैसे-राष्ट्रीय पर्यावरण युवा संसद, जनजातीय छात्र संसद, पूर्वोत्तर युवा छात्र संसद और छात्रा संसद को दर्शाया गया। इसके साथ ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सौ वर्ष की यात्रा, पंच परिवर्तन एवं प्रा. यशवंतराव केलकर के जीवनदर्शन को भी प्रदर्शनी में विशेष स्थान दिया गया। 2025 में रानी अबक्का की 500वीं जयंती और भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में उनके योगदान को भी प्रेरणादायक रूप में प्रदर्शनी का हिस्सा बनाया गया। प्रदर्शनी का अवलोकन करने के बाद उप-मुख्यमंत्री अरुण साव ने कहा कि ऐसी प्रदर्शनी न केवल संस्कृति के संरक्षण का माध्यम होती है, अपितु यह आने वाली पीढ़ियों को अपनी जड़ों से जोड़ने का कार्य भी करती है। अभाविप का यह प्रयास वास्तव में प्रेरणास्पद है। संगठन की सामाजिक चेतना और राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शनी के हर खंड में परिलक्षित हो रही है।

केंद्रीय कार्यसमिति बैठक

राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक से पहले गत 27 मई को एक दिवसीय केंद्रीय कार्यसमिति बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के दौरान 'ऑपरेशन सिंदूर' के अंतर्गत भारतीय सेना की वीरता एवं पराक्रम का अभिनंदन करते हुए सभी प्रतिनिधियों ने सामूहिक रूप से भारतीय सेना के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की और राष्ट्रसेवा के संकल्प को दोहराया।

नागरिक अभिनंदन समारोह

राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक की पूर्व संध्या पर आयोजित नागरिक अभिनंदन समारोह को संबोधित करते हुए छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि युवा शक्ति राष्ट्र शक्ति है। देश में विश्व की अपेक्षा सबसे ज्यादा युवा हैं। 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में युवाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होगी। अभाविप की राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद की बैठक न केवल युवाओं की ऊर्जा और राष्ट्रभक्ति को दिशा देने का कार्य कर रही है, बल्कि यह नक्सलवाद, स्वदेशी

शिक्षा, आंतरिक सुरक्षा और राष्ट्रीय चरित्र निर्माण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चिंतन का मंच बन रही है। उन्होंने बताया कि छत्तीसगढ़ में अब नक्सलवाद के अंत की ओर बढ़ रहा है और युवाओं की भागीदारी से राज्य को विकसित छत्तीसगढ़ बनाने का संकल्प और भी मजबूत हुआ है।

नागरिक अभिनंदन समारोह में पाटेश्वर धाम बालोद के संत बालयोगेश्वर रामबालक दास महात्यागी, अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही, राष्ट्रीय महामंत्री डा. वीरेंद्र सिंह सोलंकी, आयोजन की स्वागत समिति के अध्यक्ष नितिन गौरीशंकर अग्रवाल, स्वागत समिति के सचिव धवल शाह, अभाविप छत्तीसगढ़ के प्रदेश अध्यक्ष डा. अमित बघेल, अभाविप छत्तीसगढ़ प्रदेश मंत्री यज्ञदत्त वर्मा के साथ ही रायपुर के कई गणमान्य नागरिक शामिल हुए।

घर-घर पहुंचेगी भगवान बिरसा मुंडा के जन्मस्थल की पवित्र मिट्टी

भगवान बिरसा मुंडा की सार्धशती यानी 150 वीं जयंती वर्ष पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने एक ऐतिहासिक पहल की है। राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक से पहले अभाविप झारखंड के कार्यकर्ताओं द्वारा भगवान बिरसा मुंडा की जन्मस्थली उलिहातू की पवित्र माटी को एकत्रित किया गया। इसके बाद धरती आबा के वंशज द्वारा पूजित मिट्टी को पीतल के विशेष पात्र में रायपुर लाकर स्मृति स्थल में रखा गया। राष्ट्रीय कार्यकारी बैठक के उपरांत इस पावन मिट्टी को देश के सभी प्रांतों में स्मृति स्वरूप भेजा गया है, जिसे प्रांत के कार्यकर्ता घर-घर तक पहुंचाने का कार्य करेंगे। अभाविप के जनजाति कार्य प्रमुख प्रमोद राउत ने बताया कि भगवान बिरसा मुंडा की जन्मस्थली सम्पूर्ण भारतवर्ष के युवाओं के लिए प्रेरणा का केंद्र है। इस मिट्टी को भारत के प्रत्येक प्रांत में उनके संघर्ष एवं अंग्रेज के विरुद्ध लोहा लेने की हिम्मत प्रत्येक नागरिक को उनके जीवन से आत्मसात कराएंगी। अभाविप का यह प्रयास, न केवल जनजाति समाज के गौरवगाथा को राष्ट्रीय पटल पर प्रस्तुत करता है, बल्कि सांस्कृतिक एकता और स्वाभिमान के भाव को भी जागृत करता है। उल्लेखनीय है कि अभाविप द्वारा भगवान बिरसा मुंडा के जन्म की सार्धशती पर वर्ष भर उनके जीवन एवं योगदान पर आधारित विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा, जिसमें अखिल भारतीय स्तर पर छात्रावासों का सर्वेक्षण, पुस्तकों का प्रकाशन तथा उनके जन्मस्थल की मिट्टी से पूजन एवं यात्रा जैसे कार्यक्रम शामिल होंगे।

71वां राष्ट्रीय अधिवेशन देहरादून में

अभाविप का 71वां राष्ट्रीय अधिवेशन देवभूमि उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में आयोजित किया जाएगा। राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार देहरादून में अभाविप का राष्ट्रीय अधिवेशन पहली बार होगा। अधिवेशन आगामी 28 से 30 नवंबर के मध्य होगा, जिसमें देशभर के कार्यकर्ता हिस्सा लेंगे।

राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा नवंबर में

अभाविप प्रकल्प अंतर राज्य छात्र जीवन दर्शन (सील)

द्वारा प्रत्येक वर्ष आयोजित की जाने वाली राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा आगामी नवंबर माह में आयोजित की जाएगी। पूर्वोत्तर क्षेत्र के क्षेत्रीय संगठन मंत्री कमल नयन ने बताया कि नवंबर माह में आयोजित होने वाली एकात्मता यात्रा में शेष भारत के छात्र-छात्राएं पूर्वोत्तर के राज्यों में जाकर स्थानीय संस्कृति, परंपरा, खान-पान, वेश-भूषा इत्यादि से परिचित होंगे। एकात्मता यात्रा का आयोजन 1966 से किया जा रहा है। यात्रा का उद्देश्य उत्तर-पूर्व के राज्यों को शेष भारत से जोड़ने, उनकी संस्कृति-परंपरा से परिचित एवं एकात्मता स्थापित कराना होता है। यात्रा में हिस्सा लेने वाले छात्र-छात्रा किसी होटल या सराय की जगह, उस स्थान में रहने वाले किसी स्थानीय परिवार के घर में ठहरते हैं। इससे उनका परिवार के साथ जीवन भर का आत्मीय संबंध बन जाता है।

प्रा. यशवंतराव केलकर पर अभिवाचन

राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक में अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं संगठन शिल्पी प्रा. यशवंतराव केलकर पर केंद्रीत अभिवाचन किया गया। अभिवाचन को देखकर लग रहा था जैसे यशवंतराव जी अभी भी सभी के बीच में हैं और कोई कार्ययोजना बना रहे हैं। उनके द्वारा बनाई गई कार्यपद्धति आज भी अभाविप के लिए ध्येय वाक्य है। अभिवाचन के निर्माता एवं निदेशक मिलिंद भानगे ने बताया कि वह अभाविप के कार्यकर्ता रहे हैं। यशवंत शती के उपलक्ष्य पर उनके मन में कुछ नया करने की योजना बनाई और अभिवाचन करने का निर्णय लिया। इस विषय में संगठन से चर्चा हुई तो इसके लिए संगठन सहर्ष तैयार हो गया। सर्वप्रथम पुणे में प्रिय यशवंतराव जी के नाम से मराठी में अभिवाचन हुआ, जिसे कार्यकर्ताओं ने काफी सराहा। पुणे के बाद इसका वाचन मुंबई में हुआ। दो अभिवाचन के बाद यह निर्णय हुआ कि रायपुर में होने वाली कार्यकारी परिषद बैठक में अभिवाचन करना है। उसके बाद प्रिय केलकर जी... नाम से हिंदी में अभिवाचन बनाया। अभिवाचन कुल 75 मिनट का रहा। अभिवाचन को सैंड आर्ट के माध्यम से भी दिखाया गया, जिसमें यशवंतराव जी के साथ काम करने वाले ज्येष्ठ कार्यकर्ताओं के संस्मरण भी शामिल थे। इस अभिवाचन में कुल चार कलाकारों ने हिस्सा लिया। अभिवाचन का मूल उद्देश्य केलकर जी के जीवन चरित्र को वर्तमान कार्यकर्ताओं से परिचित कराना है।

अभाविप के शिल्पकार एवं पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रा. यशवंत राव केलकर के जन्मशती को अभाविप 'यशवंत शती' के रूप में मनाएगी। राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार संगठन शिल्पी प्रा. यशवंतराव केलकर के जन्मशती पर वर्ष भर संगोष्ठी, सेमिनार, कार्यशाला, वाद-विवाद प्रतियोगिता, अभिवाचन जैसे विविध कार्यक्रम का आयोजन उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से कार्यकर्ताओं को अवगत कराया जाएगा। अभाविप को अखिल भारतीय स्वरूप देने के साथ-साथ अभाविप के संगठनात्मक विस्तार, सुदृढ़ीकरण के साथ ही वैचारिक अधिष्ठान, कार्यकर्ता विकास तथा कार्यपद्धति को स्थापित एवं निर्धारित करने में प्रा. केलकर की उल्लेखनीय भूमिका रही है।

रानी अबक्का जयंती पर होंगे कार्यक्रम

रानी अब्बक्का की 500वीं जयंती वर्ष के उपलक्ष्य

पर अभाविप उनके संघर्ष और सम्मान को लेकर विद्यार्थियों के बीच जाएगी एवं देश के विभिन्न शैक्षिक परिसरों में वर्ष भर विविध कार्यक्रमों का आयोजन करेगी। महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय परिसर में संगोष्ठी, भाषण सहित अन्य गतिविधियों के माध्यम से छात्रों को उनके संघर्ष और जीवन चरित्र से परिचित कराया जाएगा।

जल संरक्षण का अभिनव प्रयोग

रायपुर में आयोजित अभाविप की राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक में जल संरक्षण का अभिनव प्रयोग किया गया, जहां पर देश के विभिन्न प्रांतों से आने वाले प्रतिनिधियों ने अपने बर्तन धोने के लिए पानी के स्थान पर लकड़ी के बुरादे का उपयोग किया। बिना एक बूंद पानी का प्रयोग किए लकड़ी के बुरादे से धोया गया बर्तन एकदम साफ दिखाई दिया। लकड़ी के बुरादे ने थाली में लगे तेल इत्यादि को सोखकर साफ कर दिया, जिसके पश्चात कपड़े से उस थाली को साफकर रख दिया जाता था। अभाविप का यह प्रयोग पर्यावरण एवं जल संरक्षण की दिशा में सराहनीय कदम रहा।

गोधन से निर्मित नाम पट्टिका का उपयोग

बैठक में जीरो फूड वेस्ट नीति अपनाई गई। बचे हुए भोजन का बस्तियों में वितरण करने के साथ ही जैविक अपशिष्ट से खाद निर्माण किया गया। कार्यक्रम में प्लास्टिक की नेमप्लेट की जगह गोधन से निर्मित नेम प्लेट का प्रयोग किया गया।

श्रीअन्न से बनाई गई रंगोली

राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक के मंच के सामने श्रीअन्न (मिलेट्स) से बनाई गई रंगोली कार्यकर्ताओं के लिए आकर्षण का केंद्र तो रही, साथ ही श्रीअन्न के उपयोग हेतु प्रेरित भी किया। रंगोली बनाने वाले कार्यकर्ता ने बताया कि रंगोली में किसी भी प्रकार के रंग का प्रयोग करने के स्थान पर विविध प्रकार के श्रीअन्न का प्रयोग किया गया, जिससे बैठक में आए कार्यकर्ता अपने देश में उपजने वाले अलग-अलग प्रकार के श्रीअन्न से परिचित हों एवं अपने दैनिक जीवन के आहार में प्रयोग कर स्वस्थ रहें।

संघ शताब्दी वर्ष पर संगठनात्मक कार्य विस्तार

इस वर्ष रा.स्व.संघ की स्थापना के सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं। संघ शताब्दी वर्ष को ध्यान में रखते हुए अभाविप संगठनात्मक कार्य विस्तार एवं कार्य की गुणवत्ता पर विशेष जोर देगी। साथ ही 'पंच परिवर्तन' के आह्वान के साथ संकल्पबद्ध अभियान चलाया जाएगा। पंच परिवर्तन अभियान में स्व का बोध अर्थात स्वदेशी, नागरिक कर्तव्य, पर्यावरण, सामाजिक समरसता एवं कुटुम्ब प्रबोधन शामिल है। ■

भाषा अनेक-भाव एक

■ चमू कृष्ण शास्त्री

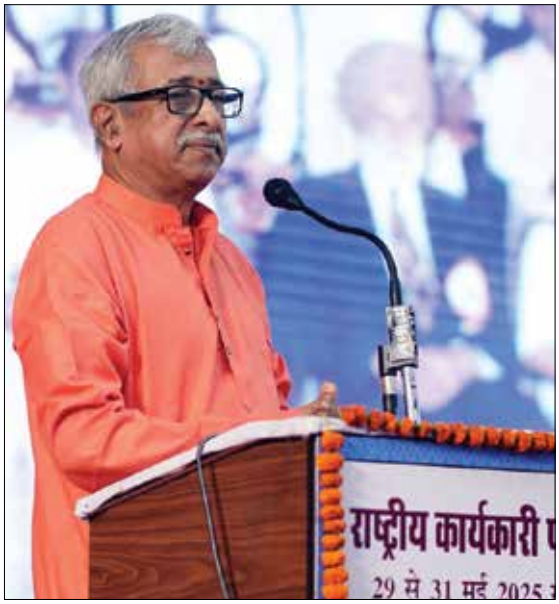

भारत में भाषा का प्रयोग समाज को तोड़ने के लिए किया जाता रहा है, परंतु भारत की परंपरा "अनेक भाषा-एक भावना" की रही है। भाषा जोड़ने का विषय है, तोड़ने का नहीं। विविधता भारत का सौंदर्य है और एकता उसकी शक्ति। यदि भारतीय भाषाओं को आकांक्षा की भाषा बनाना है तो उनके लिए आवश्यक पारिस्थितिकी (इकोसिस्टम) का निर्माण किया जाना चाहिए। वास्तव में भारत की भाषाएं केवल भाषा नहीं, भारत की गंगा है, सांस्कृतिक चेतना है। भाषा भावनाओं का निर्माण करती है। भाषा अनेक, लेकिन भाव एक है। अनादिकाल से भारतीय भाषा एक विचार को साथ लेकर चली है। भारतीय भाषाओं में जो विविधता है, उस विविधता के बीच में, लोगों में और साहित्य में एक आत्मीयता है। इसी आत्मीयता के कारण ही हजारों वर्षों से भारत एक राष्ट्र के रूप में अखंड और अडिग रहा है। अंग्रेजों के आने से पहले भारत में कभी भी भाषा के कारण विवाद या संघर्ष का उदाहरण इतिहास में नहीं मिलता है।

भारत में अनेकों भाषाएं थी, लेकिन अनुवाद की व्यवस्था नहीं थी। एक भाषा से दूसरी भाषा का अनुवाद नहीं था, लेकिन लोग समझते थे। किसी भी भारतीय भाषा में रामायण की अनुवाद नहीं हुआ है, लेकिन मूल रामायण की कथा के दर्शन को लेकर हर भारतीय भाषा में स्वतंत्र कृति रचना हुई है। तुलसी रामायण, वाल्मीकि रामायण का अनुवाद नहीं है, वह स्वतंत्र कृति है। भारत में 40 लाख पांडुलिपि 27 भाषाओं में है। एक भी पांडुलिपि में अनुवाद नहीं मिलता। मूलाकृति की टीका मिलती हैं, लेकिन किसी भाषा में अनुवाद नहीं मिलता। सभी भारतीय भाषाओं में आंतरिक वाक्य रचना समान है। व्याकरण समान है, वाक्य रचना समान है, अक्षरमाला समान है, ध्वनि व्यवस्था समान है, पचास प्रतिशत शब्द समान है। इसीलिए एक भारतीय भाषा जो जानता है, उसको दूसरी भारतीय भाषा सीखना एक नई भाषा सीखना जैसा नहीं है। भारत देश बहुभाषी है। प्राचीन भारत भी बहुभाषी था और वर्तमान भारत भी बहुभाषी है। इस तथ्य को रखकर भाषा नीति एवं भाषा के विषय में दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। अगर इस बहुभाषिकता को आगे बढ़ाना है तो एक अभियान यह चलाना होगा कि एक और भारतीय भाषा सीखें। एक नई भाषा सीखना का अर्थ है एक नई दुनिया में प्रवेश करना और इससे ज्ञान का स्तर भी बढ़ेगा।

वर्तमान समय में भारतीयता को शिक्षा में लाने के लिए वि-उपनिवेशीकरण (डी-कॉलोनाइजेशन) के लिए जो प्रयास किए जा रहे हैं, उसमें भारतीय भाषा और भारतीय भाषा माध्यम से शिक्षा की बड़ी भूमिका है। भारतीय भाषा के लिए आज जो कार्य हो रहा है, उसके साथ ही पूरे भारत में भारतीय भाषाओं के विकास के लिए प्रचार, विस्तार और विकास की रणनीति को अपनाना होगा। आज भारतीय भाषाओं के प्रति एक नया आग्रह दिख रहा है। ऐसे में सभी क्षेत्रों में भारतीय भाषा का प्रयोग होना चाहिए।

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) विद्यालयों में कुछ समय पहले तक केवल अंग्रेजी माध्यम, हिंदी माध्यम और त्रिपुरा में कुछ स्थानों में बंग माध्यम शिक्षा की व्यवस्था थी। लेकिन अब सीबीएसई ने 22 भाषा माध्यम से शिक्षा देने के लिए व्यवस्था की है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी), बार काउंसिल ऑफ इंडिया ने भी भारतीय भाषाओं में शिक्षा और भारतीय भाषाओं में परीक्षा देने के लिए व्यवस्था की है। इसी तरह राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) भी अब तक स्कूली पाठ्यक्रम से जुडी पुस्तकें हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू तीन भाषाओं में लाती थी, लेकिन अब 22 भाषाओं में ला रही है। कौशल विकास शिक्षा से जुडी पुस्तक अभी तक केवल अंग्रेजी में आती थी, लेकिन अब छह हजार से अधिक कौशल विकास की पुस्तकें 22 भाषाओं में तैयार हो रही है। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआइसीटीइ) से जुडी इंजीनियरिंग शिक्षा की 150 पुस्तकों का 12 भाषाओं में प्रकाशन हो चुका है। ऐसे कई प्रकार के प्रयास हो रहे हैं, जिनका उद्देश्य मुख्यतः शिक्षा क्षेत्र में भाषा पढ़ाना भी है। भारतीय भाषाओं के विषय में गंभीरता से सोचना है तो भारतीय भाषा पारिस्थितिकी का निर्माण करना होगा और शिक्षा क्षेत्र में कई प्रकार के कदम उठाने होंगे। इसमें शिक्षण माध्यम का भाषा परिवर्तन करना, सम्बंधित सभी क्षेत्रों में पारिस्थितिकी परिवर्तन करना और समाज की मानसिकता में परिवर्तन करना आदि प्रमुख हैं।

2035 में मैकाले शिक्षण पद्धति (1835) के दो सौ वर्ष पूरे होंगे। उसकी दो सौवीं वर्षगांठ से पहले मैकाले शिक्षण पद्धति को पूरी तरह समाप्त करना होगा। इसके लिए आगामी दस वर्षों में बहुत प्रयास करने ही होंगे। वि-उपनिवेशीकरण से जुड़े इस कार्य के लिए भारतीय भाषाओं को तकनीकी से जोड़ना होगा। इसके लिए कृत्रिम बुद्धिमता (एआई) का उपयोग किया जा सकता है, जिसका सूत्र यह होना चाहिए कि भारतीय भाषाओं के लिए एआई, भारतीय भाषा में एआई, भारतीय भाषा द्वारा एआई। भारतीय भाषाओं को आकांक्षा का भाषा बनाना है कि तो योजनाबद्ध तरीके से भारतीय भाषाओं के लिए कार्य करने होंगे। सबसे पहले तो भारतीय भाषाओं के प्रति चिंतन का वातावरण निर्माण करना होगा। भारतीय भाषाओं के गैर अनुवादित शब्दों की सूची बनानी होगी। अनावश्यक अंग्रेजी का प्रयोग बंद करना होगा। आगामी समय में भारतीय भाषाओं के अनुवाद के लिए लाखों की संख्या में अनुवादकों की आवश्यकता होगी। अनुवाद को रोजगार के साथ जोड़कर भारतीय भाषा के आधार यानी भारत की ज्ञान परंपरा को प्राप्त किया जा सकता है। यह भी याद रखना होगा कि भारतीय ज्ञान परंपरा भारतीय भाषा में है, अंग्रेजी में नहीं है। भारतीय ज्ञान परंपरा के लिए, भारतीयता के लिए और एकता के लिए- भारतीय भाषा को साधन बनाना और भारतीय भाषा के माध्यम से भारतीय शिक्षा आधारित विकसित भारत के निर्माण की दिशा में बढ़ना होगा। इस दिशा में भारतीय भाषा को आकांक्षा की भाषा बनाना, भारतीय भाषा पारिस्थितिकी का निर्माण एवं समाज मानस में परिवर्तन आदि तीन महत्वपूर्ण बिंदुओं पर गंभीरता के साथ कार्य करके विकसित भारत के स्वप्न को पूरा कर सकेंगे। ■

(राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक में दिए गए भाषण के संपादित अंश)

सुधी पाठकों!

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' जून 2025 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। यह अंक महत्वूर्ण लेख एवं विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों एवं खबरों को समाहित किए हुए हैं। आशा है, यह अंक आपके आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा। कृपया 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव एवं विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई-मेल पर अवश्य भेजें : -

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति'
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली-110002
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti
www.instagram.com/ Rchhatrashakti

पारित हुए चार प्रस्ताव

एक अन्य प्रस्ताव में आपरेशन सिंदूर की सराहना

छत्तीसगढ़ में संपन्न अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) की राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक में चार प्रस्ताव पारित किए गए, जिनमें "देश में कोचिंग संस्थानों पर नियंत्रण एवं नियमन हो सुनिश्चित", "कुलपतियों की नियुक्ति में विलंब एवं विवाद से विश्वविद्यालयों में बढ़ती अस्थिरता चिंतनीय","भारत की आंतरिक सुरक्षा हेतु सरकार की तत्परता एवं समाज की सजगता आवश्यकता" एवं "वैश्विक भू-राजनीतिक व्यवस्था में भारत की बहुआयामी पहल" विषय पर पारित प्रस्ताव शामिल हैं। इसके साथ ही केंद्रीय कार्यसमिति बैठक में "भारतीय स्वाभिमान और शौर्य का प्रतीक आपरेशन सिंदूर अभिनंदनीय" प्रस्ताव भी पारित हुआ।

"देश में कोचिंग संस्थानों पर नियंत्रण एवं नियमन हो सुनिश्चित" प्रस्ताव में कहा गया कि शिक्षा का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ उन्हें जागरूक, उत्तरदायी एवं सक्षम नागरिक बनाना है। शैक्षिक संस्थान ऐसी शिक्षा प्रदान करने में मुख्य केंद्र है किंतु वर्तमान समय में कोचिंग संस्थान इस क्षेत्र में तीव्रता से स्थापित हो रहे है। शिक्षण संस्थानों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के अभाव में कोचिंग संस्थानों का बढ़ता वर्चस्व देश की शिक्षा व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न खड़ा कर व्यापारीकरण को भी बढ़ावा दे रहा है। कोचिंग संस्थानों के विनियमन हेतु दिशा निर्देश-2024 के तहत निर्धारित मापदंडों को अधिकांश संस्थान पूरी तरह अनदेखी कर रहे हैं। अभाविप का मानना है, कि कोचिंग संस्थानों में प्रशिक्षित परामर्शदाताओं की नियुक्ति अनिवार्य की जाए, जिससे विद्यार्थियों को मानसिक तनाव से राहत मिल सके और आत्महत्या पर रोक लग सके। कोचिंग संस्थानों द्वारा किए जा रहे भ्रामक और झूठे विज्ञापनों पर तुरंत रोक लगाने की आवश्यकता है। साथ ही कोचिंग संस्थानों द्वारा मनमानी शुल्क वसूली पर अंकुश लगाने हेतु अधिकतम शुल्क सीमा तय कर केंद्र सरकार कोचिंग संस्थानों के लिए बने दिशा निर्देश-

2024 को एक अधिनियम में शामिल करे तथा राज्य सरकारें भी नियमों के अनुपालन के लिए आगे आएं। अभाविप का मानना है कि कोचिंग संस्थानों में छोटी आयु के विद्यार्थियों के जाने पर भी व्यापक चर्चा करनी चाहिए एवं विद्यालयीन अभिभावकों से आग्रह करते हैं कि कोचिंग संस्थानों के प्रलोभन में न आए। कोचिंग संस्थानों पर नियंत्रण एवं नियमों के क्रियान्वयन की आवश्यकता है ताकि देश में शिक्षा व्यवस्था पूरी तरह से बाजार-निर्भर न हो जिससे विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक जीवन प्रभावी व परिणामकारी बन सके।

अभाविप ने कुलपतियों की नियुक्ति में विलंब एवं विवाद से विश्वविद्यालयों में बढ़ती अस्थिरता पर पारित प्रस्ताव में चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि देश के 56 केंद्रीय विश्वविद्यालयों में से 6 विश्वविद्यालयों में कुलपति के पद रिक्त हैं जो कार्यवाहक कुलपतियों द्वारा संचालित किए जा रहे हैं। इनमें कुलपति नियुक्ति के लिए शिक्षा मंत्रालय द्वारा विज्ञापन निकालने में विलंब तथा खोज सह चयन समिति (सर्च कमेटी) का गठन न हो पाने तथा इसके उपरांत विजिटर की स्वीकृति न मिलने की प्रक्रिया में प्रधानमंत्री कार्यालय की अनुशंसा में विलंब के कारण नियुक्ति प्रक्रिया पूर्ण नहीं हो पा रही है। राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों में भी कुलपति पद के समरूप निदेशकों की विजिटर के रूप में राष्ट्रपति द्वारा नियुक्तियां की जाती हैं जो कई संस्थानों में लंबित हैं। वर्तमान में 100 से अधिक राज्य विश्वविद्यालयों में कुलपति की नियुक्ति लंबित है। राज्य विश्वविद्यालयों में राज्य सरकार, विश्वविद्यालय तथा राज्यपाल द्वारा नामांकित प्रतिनिधि समय से नियुक्त न हो पाने के कारण खोज सह चयन समिति का गठन लंबित रहने से नियुक्ति प्रक्रिया में अवरोध उत्पन्न हो रहा है। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव विश्वविद्यालयों की रैंकिंग, छात्र नामांकन, शोध अनुदान और शिक्षकों की नियुक्तियों पर पड़ा है। अभाविप का सुविचारित मत है कि यूजीसी द्वारा निर्धारित दिशानिर्देशों का सभी राज्यों और विश्वविद्यालयों में अनिवार्य अनुपालन सुनिश्चित कराते हुए कुलपति नियुक्ति की प्रक्रिया को स्पष्ट, समयबद्ध, पारदर्शी और राजनीति से मुक्त बनाने की आवश्यकता है। यूजीसी के दिशा-निर्देशों में उल्लेखित कुलपति नियुक्ति के राज्यपाल के पूर्ण अधिकारों के संरक्षण में राज्य सरकार सहयोग करे। राज्यपाल द्वारा नियुक्ति प्रक्रिया में आवेदनकर्ता का मूल्यांकन हर स्तर पर करते हुए कुलपति पद की गरिमा के अनुरूप प्रतिभा का ही चयन किया जाए। प्रक्रिया की निरंतरता के क्रम में खोज सह चयन समितियों का गठन समय पर हो, जिससे वर्तमान कुलपति के कार्यकाल समाप्ति के कार्यदिवस में ही नए कुलपति कार्यभार ग्रहण कर लें। इसी क्रम में सीनेट अथवा सिंडिकेट अपने प्रतिनिधि को नियत समय-सीमा में नामित करें तथा राज्य सरकारें विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता एवं कुलाधिपति के अधिकारों के संरक्षण में सहयोग के लिए आगे आएं।

भारत की आंतरिक सुरक्षा को लेकर पारित प्रस्ताव में कहा गया कि हाल ही में आपरेशन सिंदूर में भारत ने अपने सैन्य बल, अदम्य साहस एवं सशक्त नेतृत्व से पाकिस्तान पर विजय प्राप्त करते हुए भारतीय सीमा को ओर सुदृढ किया है। लेकिन भारत के भीतर माओवादियों, रोहिग्या एवं बांग्लादेशी घुसपैठ, पाकिस्तान के लिए जासूसी और बंगाल में लोकतंत्र एवं संवैधानिक मूल्यों की हत्या भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए एक चुनौती बनकर सामने आ रहे हैं। आपरेशन कगार के माध्यम से भारतीय सुरक्षा बलों द्वारा माओवाद पर कठोरतम कार्रवाई मील का पत्थर साबित हुई है। देश इस कार्रवाई को आंतरिक सुरक्षा हेतु साहसिक कार्यवाही के रूप में देख रहा है, वहीं दूसरी ओर शहरी माओवादी छाती पीट-पीट कर विलाप करते हुए समाज में भ्रम उत्पन्न करने का प्रयास कर रहे है। अभाविप का मत है कि ऐसे सभी शहरी माओवादियों पर कड़ी दृष्टि रखते हुए उन पर दंडात्मक कार्यवाई की जानी चाहिए। इसके साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत पाक परस्त जासूसों के प्रतिनिधि और राष्ट्र विरोधी बयान देने वाले देश द्रोहियों को चिन्हित कर उन पर भी कड़ी कार्यवाई की जाना चाहिए। बांग्लादेशी घुसपैठिए एवं रोहिंग्या की बढ़ती जनसंख्या पूर्वोत्तर, बंगाल, ओडिसा, बिहार, झारखण्ड, दिल्ली और जम्मू एवं कश्मीर के सामाजिक-सांस्कृतिक ढांचे के लिए भी खतरा बनती जा रही है। अभाविप मानती है कि ऐसे सभी प्रकार के घुसपैठियों को त्वरित गति से एक उचित समय सीमा तय करते हुए भारत से निष्कासित करने के लिए अपनी कार्यवाही को

और अधिक गति प्रदान करें। साथ ही घुसपैठियों को दस्तावेज उपलब्ध कराने वाले सरकारी कर्मचारियों एवं नेताओं की भी जांच कर उन पर उचित कार्रवाई की जानी चाहिए। प्रस्ताव में कहा गया कि पश्चिम बंगाल में लोकतंत्र एवं संवैधानिक मूल्यों की हत्या हो चुकी है। अभाविप भारतीय न्यायालय तथा माननीय राष्ट्रपति महोदया से निवेदन करती है कि पश्चिम बंगाल में लोकतंत्र की बहाली तथा संवैधानिक मूल्यों की रक्षा के लिए भी समीचीन कदम उठाएं।

वैश्विक भू-राजनीतिक व्यवस्था में भारत की बहुआयामी पहल विषय में पारित प्रस्ताव में कहा गया कि भारत अपनी निरंतर बढ़ती अर्थव्यवस्था, रणनीतिक स्वायत्तता, तकनीकी प्रगति और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के माध्यम से एक वैश्विक शक्ति बनने की ओर अग्रसर है। भारत ने जापान को पीछे छोड़ते हुये 4.187 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था के साथ विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का गौरव प्राप्त किया है। वैश्विक परिदृश्य में भारत को विभिन्न मोर्चों पर विरोधों का सामना करना पड़ रहा है, जिनका समाधान अत्यंत आवश्यक है। वैश्विक बाजार बलों ने सदैव भारत की वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनने के योजनाओं में बाधा डालने का प्रयास किया। इस व्यापारिक संघर्ष का केंद्र अमेरिका, विकासशील देशों की आर्थिक प्रगति मे बाधक है। चीन, अपने विस्तारवादी दृष्टिकोण के कारण, भारत के लिए सदैव चिंता और तनाव का प्रमुख कारक रहा है। 'स्टिंग ऑफ पर्ल्स' रणनीति के तहत, चीन भारत के पड़ोसी देशों में वाणिज्यिक और सैन्य ठिकानों का जाल बिछा रहा है। हाल ही में चीन, पाकिस्तान और अफगानिस्तान द्वारा चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे को अफगान क्षेत्र तक विस्तारित करने का निर्णय भारतीय उपमहाद्वीप भू-राजनीति में एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम है। यह चीन को बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव के तहत अरब सागर तक छोटा और सुरक्षित मार्ग प्रदान करता है। यह गलियारा पाकिस्तान एवं चीन अधिकृत लद्दाख से होकर गुजरता है, जिससे भारत की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का उल्लंघन है। इसके अतिरिक्त, ब्रह्मपुत्र नदी पर दुनिया का सबसे बड़ा जलविद्युत बांध बनाने की चीन की योजना ने पर्यावरणीय प्रभाव, जल संकट और पूर्वोत्तर भारत के लिए संभावित चुनौतियों की आशंकाएं बढ़ा दी हैं। वर्तमान भारतीय कूटनीतिक व्यवस्था ने चीन के प्रति अपनी पारंपरिक, आदर्शवादी नेहरू नीति को त्यागते हुए कौटिल्य यथार्थवाद को अपनाया है। विश्व पटल पर पाकिस्तान अब एक आतंकी राष्ट्र के रूप में स्थापित हो चुका है, वहीं तुर्की एवं अज़रबेजान द्वारा मजहबी आतंकवाद को पुनः स्थापित करने के प्रयास और बांग्लादेश का इस खतरनाक भू-राजनीतिक त्रिकोण में सम्मिलित होना वैश्विक इस्लामिक एजेंडा को इंगित कर रहा है। अभाविप का मानना है कि भारत का 'विश्व गुरु' का आदर्श आतंकवाद और उन छद्म महाशक्तियों के लिए सटीक उत्तर है जो वैश्विक व्यवस्था को नियंत्रित करने की प्रयास करती हैं। भारत का वर्तमान नेतृत्व इन संकटों का सामना करने में मजबूत कूटनीतिक संबंधों और 'जैसे को तैसा' नीति के साथ सक्षम है। अभाविप युवाओं और छात्रों से आह्वान करता है कि वह ऐसे स्टार्टअप्स की शुरुआत करें जो उन तकनीकों पर केंद्रित हो, जिन्हें भारत वर्तमान में विदेशी देशों से आयात करता है। रक्षा, अर्धचालक, स्वास्थ्य देखभाल, सामाजिक विज्ञान शोध और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे प्रमुख क्षेत्रों में नवाचार करके युवा प्रतिभाएं भारत को आत्मनिर्भर और तकनीकी रूप से संप्रभु बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

अभाविप केंद्रीय कार्यसमिति बैठक में पारित प्रस्ताव में कहा गया कि भारत की सेनाओं ने 'आपरेशन सिंदूर' के माध्यम से जिस साहस, रणनीतिक समझ और राष्ट्रीय आत्मसम्मान का प्रकटीकरण किया, अभाविप उसकी ना केवल सराहना करती है, अपितु इसे भारत की संप्रभुता और सभ्यतागत सम्मान की एक मजबूत अभिव्यक्ति मानते हुए अभिनंदन करती है। अभाविप की केंद्रीय कार्यसमिति पहलगाम आतंकी हमले में मारे गए 25 भारतीय एवं एक नेपाली पर्यटक के प्रति अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त करती है। 'आपरेशन सिंदूर' यह नाम एक सैन्य रणनीति ही नहीं, अपितु यह संकल्प भी है कि भारत अब हर आघात का उत्तर अपने मूल्यों और शक्ति के समन्वय से देगा। आपरेशन सिंदूर' की सफलता को केवल एक सैन्य अभियान की विजय नहीं, अपितु जनभावना की सामूहिक गूंज के रूप में अभिव्यक्त कर रही हैं। अभाविप 'आपरेशन सिंदूर' की गौरवपूर्ण सफलता का अभिनंदन करती है। ■

(राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक में पारित प्रस्ताव के संपादित अंश)

इच्छाशक्ति के दिशा-निर्धारण का मानस तंत्र है विमर्श

■ प्रशांत शाही

क्या आपने विचार किया है कि ऐसा कैसे होता है कि किसी एक समय में कोई एक विषय चर्चा (ट्रेंड) में आ जाता है? समाज का अधिकांश समूह एक ही विषय को लेकर सोच रहा होता है। ऐसा कैसे हो जाता है कि पूरा समाज एक साथ एकमत होकर यह सोचने लगता है कि बच्चे को इंजीनियरिंग की पढ़ाई करा देने से उसका भविष्य उज्ज्वल हो जाएगा? यह कैसे स्थापित हो जाता है कि सारा समाज उद्यम को छोडकर नौकरी पाने की दिशा में ही दौड़ने लगता है या फिर दुनिया के किसी भी समाज में कोई भी विषय चर्चा के केंद्र में कैसे आता है?

यह समझना इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि दुनिया भर में चाहे कोई भी आंदोलन हो, युद्ध हो, चुनाव हो, फैशन ट्रेंड्स हो-यह सभी स्वीकार्यता तभी प्राप्त करते हैं जब वह विमर्श का हिस्सा बनते हैं। कहना गलत नहीं होगा कि किसी विमर्श के स्थापित हो जाने से युद्ध, आंदोलन अथवा चुनाव में लोगों को शामिल कराना आसान हो जाता है। भारत के संदर्भ में जब यह बात करें तो समझ आएगा कि चाहे स्वतन्त्रता का आंदोलन हो या समाज सुधार का कोई आंदोलन, वह सफल तभी हो पाया, जब उसमें समाज की सहभागिता हुई और जब यह विमर्श स्थापित हो पाया कि समाज सुधार अथवा स्वतन्त्रता आवश्यक और अवश्यंभावी है।

वर्तमान संदर्भ में यदि देखा जाए तो समाज में स्थापित विमर्शों का अध्ययन करना और भी आवश्यक हो गया है। देश की जनसंख्या का बड़ा हिस्सा युवाओं का है। युवाओं में जो भी विमर्श प्रचलित होगा, वह देश की दिशा और दशा दोनों तय करेगा। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि जैसा विमर्श होगा, वैसा ही युवा होगा और अंततः वैसा ही राष्ट्र होगा। विमर्श की इस महत्ता को समझना आवश्यक है। आज का युवा अपना अधिकांश समय, जिस तरह की सामग्री (कंटेंट) को ग्रहण करने में लगाता है, उनमें से अधिकतर उसके आभासी आवरण (डिजिटल स्क्रीन) पर है अर्थात आज का युवा खेलने-कूदने और वास्तविक संसार में कम सीखता है और आभासी माध्यमों पर ज्यादा अनुभव प्राप्त करता है। चाहे वह सोशल मीडिया हो या समाचार, सब कुछ उसके फोन, टैब या लैपटाप के आभासी आवरण पर उपलब्ध है। इसके माध्यम से ही आज के समय में विमर्श भी खड़े किए जा रहे हैं। चूंकि सोशल मीडिया के माध्यम से किसी भी घटना को देश के लोगों तक पहुंचने में अब क्षण भर का समय ही लगता है। अतः सोशल मीडिया मंचों पर उसी घटना को अपने-अपने ढंग से प्रस्तुत करने की होड़ लग जाती है, जो पूरे देश के लोगों के मत को प्रभावित कर सकती है। अलग-अलग व्यक्तियों या समूहों द्वारा अपने-अपने तरीके से उसी घटना को प्रस्तुत करने के कारण अलग-अलग कहानियां सामने आती हैं। इन प्रस्तुतिकरणों में जो सबसे ग्राह्य होगा उसका विमर्श स्थापित होगा; अर्थात उसके बारे में ग्राह्यता बढ़ेगी।

विमर्श स्थापित करने के तीन चरण हैं- पहला-घटना, दूसरा-प्रस्तुतीकरण एवं तीसरा विमर्श। विमर्श के इस प्रकार से स्थापित होने के बाद अगला चरण संवाद (डिस्कोर्स) का होता है। इसके अंतर्गत घटनाओं के होने, उनका प्रस्तुतीकरण करने और विमर्श स्थापित होने के क्रम में एकरूपता देखी जाने लगती है अर्थात विमर्श स्थापित करने की एक पद्धति विकसित हो जाती है। दुनिया में और भारत में भी एक डिस्कोर्स लंबे समय से हावी रहा है, जिसने पूरे शैक्षणिक क्षेत्र पर अपना दबदबा बनाए रखा। शैक्षणिक जगत के माध्यम से तय हुए विमर्शों का उपयोग समाज में नए विमर्श खड़ा करने में भी किया। शैक्षणिक जगत उनकी कही हुई बातों को प्रामाणिकता प्रदान करने का साधन मात्र बन गए। उदाहरण के लिए- यदि राजनीतिक लाभ यह विमर्श स्थापित करने में है कि महाराणा प्रताप हल्दी घाटी का युद्ध हार गए थे, तो पहले इस बात को शैक्षणिक जगत में स्थापित कर दिया जाए, फिर शैक्षणिक जगत का उदाहरण लेकर यही बात समाज में लाई जाए। ऐसा करने से राजनीतिक मंचों से कही गई बात अपनी प्रामाणिकता शैक्षणिक जगत में हासिल कर लेती है।

इसी तरह देश के इतिहास को लेकर तमाम भ्रांतियां विमर्श रूप में स्थापित हो गईं। ऐसा ही एक विमर्श भगत सिंह को

इतिहास की किताबों में 'आतंकवादी' कहकर भी गढ़ा गया। आजकल इंटरनेट आधारित प्लेटफार्म पर आने वाली अनेक फिल्में और सीरीज भी एक प्रकार का विमर्श स्थापित करने की कोशिश करती दिखाई देती हैं। उन्हें भी प्रमाणिकता हासिल करने के लिए शैक्षणिक जगत की सहमति लेना आवश्यक होता है। इसका एक उदाहरण 2019 में एक प्लेटफार्म पर आई 'लीला' सीरीज के रूप में देखा जा सकता है। सीरीज में भारतीय समाज की व्यवस्थाएं कितनी घृणित हो सकती हैं, यह दर्शाया गया है। चित्रण इस तरह से किया गया कि देश का व्यक्ति भी एक बार को यह भूल जाएगा कि यह घृणित समाज उसका ही अपना समाज है। वह अपने ही समाज से शायद घृणा करने लगे। विमर्श खड़ा करने के लिए सीरीज को एक पुस्तक पर आधारित बताया गया। जांच-पड़ताल में पता चला कि यह सीरीज जिस पुस्तक पर आधारित है, वह पुस्तक 2018 में प्रकाशित हुई थी। प्रकाशन के कुछ माह बाद पुस्तक को एक प्रतिष्ठित सम्मान भी दिया गया और उसी के बाद यह सीरीज सामने आई। अब यह विचार करने का विषय है कि पुस्तक लिखने से लेकर सीरीज के जारी होने तक के मध्य एक वर्ष से भी कम का समय लगा। ऐसे में यह कहना गलत नहीं होगा कि पुस्तक लिखने का काम मात्र उस सीरीज़ को प्रामाणिकता प्रदान करना ही था।

इसी प्रकार अंतर्राष्ट्रीय विषयों पर भी विमर्श स्थापित करने का संघर्ष चलता रहता है। हाल ही में हुए भारत और पाकिस्तान के मध्य संघर्ष को भी विमर्श की दृष्टि से देखना बेहद रोचक है। यह समझना भी आवश्यक है कि भारत ने इस पूरी प्रक्रिया के दौरान यह पहले ही समझ लिया था कि यह स्थिति पाकिस्तान के लिए केवल घटना मात्र नहीं है, बल्कि पाकिस्तान इस अवसर को अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर उठाकर अपने लिए माहौल बनाने का प्रयास अवश्य करेगा।

पाकिस्तान ने ऐसा ही किया भी। पहलगाम हमले से शुरू होकर 'आपरेशन सिंदूर' के परिणत होने तक पाकिस्तान ने इसे भारत की ओर से किए गए हमले के रूप में प्रदर्शित किया। पाकिस्तान ने कई कमजोर और गलत साक्ष्यों के आधार पर भारत पर आरोप लगाए और पाकिस्तान ने भारत के कई सारे सोशल मीडिया पर माहौल बनाने वाले लोगों की बातों को ही साक्ष्य के तौर पर प्रस्तुत किया। लेकिन पाकिस्तान की जनता ने ही पाकिस्तानी साक्ष्यों और तर्कों को नकार दिया। वहीं दूसरी तरफ भारत ने पहले ही दिन से सटीक साक्ष्यों के साथ अपनी बात रखी, जिसने विमर्श को भारत के पक्ष में रखने में सफलता प्राप्त की। इसके बाद भी पाकिस्तान को अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) से आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। भारत ने आर्थिक सहयोग की निंदा करते हुए इसे अंतर्राष्ट्रीय स्थिरता के लिए खतरा बताया। आपरेशन सिंदूर के पश्चात भारत ने अपने प्रतिनिधि दुनिया भर में भेजकर सही विमर्श स्थापित करने का प्रयास भी किया। केंद्र सरकार की यह नीति दर्शाती है कि सही विमर्श का स्थापित करना कितना आवश्यक हो गया है। ■

(लेखक, किरोड़ीमल महाविद्यालय दिल्ली में सहायक प्राध्यापक है।)

बांग्लादेश

इतिहास बदलने में जुटी यूनुस सरकार ने बंगबंधु की उपाधि छीनी

बांग्लादेश में मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार ने बांग्लादेश के संस्थापक बंगबंधु शेख मुजीबुर रहमान को मिली राष्ट्रपिता उपाधि को वापस ले लिया है। बांग्लादेश मुक्ति संग्राम का नेतृत्व करने वाले शेख मुजीबुर रहमान गत वर्ष अपदस्थ की गई प्रधानमंत्री शेख हसीना के पिता थे। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने इससे पहले शेख रहमान के चित्र को नए करेंसी नोटों से हटाने का निर्णय लिया था। इसके लिए अंतरिम सरकार ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता सेनानी परिषद अधिनियम में संशोधन करते हुए स्वतंत्रता सेनानी की परिषाभा में बदलाव भी किया है। कानून, न्याय और संसदीय मामलों के मंत्रालय द्वारा जारी किए नए संशोधित कानून में 'राष्ट्रपिता बंगबंधु शेख मुजीबुर रहमान' शब्द और कानून के उस हिस्से, जिसमें 'राष्ट्रपिता बंगबंधु शेख मुजीबुर रहमान' का नाम था, उसे और मुक्ति संग्राम की परिभाषा में बदलाव करके नई परिभाषा में बंगबंधु शेख रहमान का नाम हटा दिया है। संशोधित कानून के अनुसार, बांग्लादेश की युद्धकालीन निर्वासित सरकार से जुड़े सभी राष्ट्रीय विधानसभा के सदस्य (एमएनए) और प्रांतीय विधानसभा के सदस्य (एमपीए), जो बाद में पूर्व संविधान सभा के सदस्य माने गए थे, अब मुक्ति संग्राम के सहयोगी के तौर पर जाने जाएंगे। अभी तक उन्हें स्वतंत्रता सेनानी के रूप में मान्यता दी गई थी। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

India expands footprints in the Mediterranean

K. N. Pandita

En route flight to Canada, Prime Minister Modi, on the invitation of the President of Cyprus, made a one-day stopover at Nicosia, the capital of the strategic Mediterranean island of Cyprus.

Former PM, Indira Gandhi had visited Cyprus in 1982 and Atal Bihari Vajpayee in 2002. Modi's visit has come after a gap of 23 years. Two years ago, Minister of External Affairs, Dr. S. Jaishankar had also paid a visit to Cyprus, and in a press release of 29 December 2022, had said, "I take this opportunity to once again reiterate our principled position on the Cyprus Issue. The Republic of India reiterates its commitment to a Bi-communal, Bi-zonal federation based on UN Resolutions as the solution to the Cyprus issue." As a reciprocal gesture, last year, the Cyprus president paid a visit to India at the invitation of the government of India.

Modi Honoured

Prime Minister Narendra Modi was conferred with Cyprus' highest civilian honour-The Grand Cross of the Order of Makarios III-during his official visit to the Mediterranean nation. Expressing gratitude for the recognition, PM Modi dedicated the award to the deep-rooted friendship between India and Cyprus.

"This is an honour for 1.4 billion Indians. It is a tribute to their strength and aspirations," the Prime Minister said, adding that it also represents a recognition of India's culture, values, and the philosophy of Vasudhaiva Kutumbakam-the world is one family.

"I dedicate this award to the friendship between India and Cyprus, to our shared values, and to Cyprus's understanding of India," he added. PM Modi said that he accepts the honour on behalf of all Indians with "utmost humility and gratitude", saying it strengthens the two nations' shared commitment to peace, security, sovereignty, regional integrity, and prosperity.

A release by the Ministry of External Affairs and cited by India Today on June 16, 2025, says, "Cyprus has supported India on numerous international bodies and remains one of India's dependable friends."

Cyprus supports India's claim for a permanent seat on the expanded UN Security Council and supports the India-US Civil Nuclear Agreement within the Nuclear Suppliers Group (NSG) and IAEA key forums for India's global energy ambitions. PM Modi held bilateral talks with President Christodoulides in the capital, Nicosia, and addressed business leaders in the port city of Limassol.

Strategic significance

The story of India extending her footprints in the Mediterranean region is significant in terms of regional and international geopolitical strategy. Cyprus occupies enormous strategic importance and is considered the entry point to Europe, Africa and Asia. Cyprus has suffered belligerence from its neighbour Turkey which has been inducting Islamic elements into the strained relations with that state. A little bit of history will clarify the statement.

The Ottomans conquered Cyprus in CE 1571 and remained in power till 1875. Great Britain annexed the island unilaterally in 1914 after it declared war against the Ottomans during

World War I. Subsequently, under the provisions of the Lausanne Treaty, Turkey relinquished all claims and rights on Cyprus.

However, in 1925, following the dissolution of the Ottoman Empire, and with the removal of this obstacle, Great Britain declined to cede Cyprus to Greece and declared its annexation as the island of a Crown Colony. It had then become clear to the Greek Cypriots, from English officials (such as the Colonial Secretary Leo Amery) that unification was out of the question, and that this subject was closed, denying the hopes and expectations of the Greek Cypriots for achieving their ideal.

The 1960 constitution put in place a form of power-sharing, or consociationalism government a consociationalism state has major internal divisions along ethnic, religious, or linguistic lines, but which remains stable due to consultation among the elites of these groups, in which concessions were made to the Turkish Cypriots minority, including as a requirement that the vice-president of Cyprus and at least 30% of members of parliament would be Turkish Cypriots. Archbishop Makarios III would be the President. It is the same Archbishop Makarios II who had strongly supported Nehru's Non-Aligned movement.

Turkey's aggression

The coup staged by the Athens junta against the elected government of President Makarios on July 15, 1974, served Turkey as a pretext to impose its divisive plans against Cyprus. On July 20, 1974, Turkey invaded Cyprus, violating all rules of international law, including the Charter of the United Nations. The illegal Turkish invasion was carried out in two phases. During the second phase, Turkey took the city of Famagusta, under its control and illegally occupied over 36% of the territory of the Republic of Cyprus ever since.

This reminds us of the Pakistani attack on Kashmir in 1947 and the illegal occupation of a part of the state (POJK) to date.

As a result of the Turkish military invasion and occupation, 1,62,000 Greek Cypriots had to flee their homes becoming refugees in their own country. To this day the occupying forces impede the return of refugees to their homes and property. By the end of 1975, the vast majority of Turkish-Cypriots living in areas controlled by the legitimate government were forced to leave their homes and move, owing to Turkey's coercive policy, to the Turkish-occupied territory of the Republic of Cyprus.

20,000 Greek Cypriots and Maronites chose not to leave their homes despite the Turkish occupation. Most of those who remained, mainly on the Karpasia Peninsula, were gradually forced to abandon the area. The number of Greek Cypriots and Maronites currently living in the area has plummeted to 300 persons.

At the same time, Turkey has implemented a systematic policy of settlement of the occupied part of Cyprus since 1974 with the mass transfer of more than 1,60,000 Turks from Turkey to change the demographic profile and alter the population balance on the island. This policy, together with driving the Greek-Cypriot inhabitants out of the region, the destruction of the cultural heritage, and the illegal change of geographical place names in the occupied part of Cyprus, aims at the elimination of every single, centuries-old Greek and Christian element, and eventually the "Turkification" of the region. It also aims to change the balance of power and the social fabric in the occupied part of Cyprus, to ensure that the Turkish-Cypriot leadership conforms to the policies of the Turkish government. With the mass migration of Turkish Cypriots from the occupied territories, the total number of Turkish soldiers and settlers is now greater than the remaining Turkish Cypriots.

Erdogan's Islamist ambition

On the one hand, Turkey with NATO membership has been pressing for EU membership and on the other he is ambitious to wrest the leadership of the Islamic world from Saudi Arabia. He had succeeded in influencing Pakistan, Malaysia, Egypt, Qatar and Iran. (See" https://arab.news/n8bfk)

An Islamic "mini-summit" in Kuala Lumpur was initially intended to bring together five countries, but Indonesia and Pakistan withdrew under warning from Saudi Arabia. This left Malaysia, the host country, with only Turkey and Qatar, with Iran joining them at the last minute. Many observers have reservations about the motives prompting their participation in the meeting.

The clear common denominator is political Islam, with the Shiite version represented by the hardline Vilayat Al-Faqih doctrine of the Iranian regime, and the Sunni version represented by the Muslim Brotherhood, which has close ties with Turkey and Qatar.

Organizations such as the Brotherhood use populist religious slogans and raise issues that play on the heartstrings of the devout to serve their narrow political agenda. They seek to mobilize a public eager for idealistic victories. For example, Palestine is one of the most popular causes cynically exploited by the Brotherhood and similar organizations. Hypocritically, however, some of the participants in the Kuala Lumpur meeting prefer not to reveal their political, economic and commercial ties with Israel," wrote the Arab News on 30 December 2019

Erdogan's Kashmir Passion

Patronizing Pan-Islamism as an ingredient for the revival of "Ottoman grandeur," Erdogan came out in open support of Pakistan's stand on the Kashmir dispute. He raised the Kashmir issue several times at the UN General Assembly. Through Pakistani conduits, he established liaisons with Kashmiri Muslim separatists and promised to encourage and support the Kashmir separatist movement. The daughter of late Kashmir Hurriyat Conference leader, Ali Shah Geelani was permitted to open a TV channel in Ankara where she spate venom against India and the Hindu community. Many Kashmiri students were admitted to educational institutes in Turkey through the instrumentality of Jamaat Islami Kashmir and its mentors in Pakistan. These students were generally admitted to religious seminaries where, besides Islamic studies, they were also indoctrinated with hate India propaganda.

Tailpiece

In the three-day India-Pakistan aerial confrontation that had shaped the aftermath of the killing of 26 Indian tourists to Kashmir by Pakistan-sponsored terrorists, Turkey openly announced that she would join the Indo-Pak war on the side of Pakistan. Turkey supplied hundreds of drones to Pakistan which, however, were shot down by the Indian aerial defence mechanism. Turkey builds warships and subs for Pakistan. Reports from dependable sources reveal that Turkey's warships have been deployed for the security of Karachi city of Pakistan.

To refresh the memory of readers it will be noted that India launched "Operation Dost" to assist Turkey after the devastating earthquake in February 2023. India sent multiple batches of aid, including National Disaster Response Force (NDRF) teams, search and rescue dog squads, medical teams, field hospitals, medicines, relief materials, and specialized equipment. The Indian Air Force deployed several C-17 aircraft to deliver these supplies and personnel rapidly. Turkey's ambassador publicly thanked India, calling it a "friend in need" and appreciating the valuable help provided.

In contrast, recent reports indicate Turkey has provided military support to Pakistan during the current India-Pakistan conflict. The Indian government stated that Pakistan used Turkish SONGAR drones in attacks on Indian territory, and a Turkish naval warship visited Karachi amid heightened tensions. Turkish authorities claimed some activities, like a cargo plane landing, were routine, but the timing of military cooperation suggests active Turkish support for Pakistan in the conflict.

It is desirable that our government gives importance to the Cyprus issue and brings to the knowledge of the international community that Turkey cannot go on with illegal control of the northern one-third of Cyprus. ■

परिषद यानी राष्ट्रवाद

■ शालिनी वर्मा

गिरयस्ते पर्वतः हिमवन्तोऽरण्यं पृथिवि स्योनमस्तु
(अर्थात हे पृथ्वी! तेरे पर्वत, तेरे हिमावृत शैल, तेरे अरण्य सुखदायक हों)
उदीराणा उत्तासीनास्तिष्ठतः प्रक्रामन्तः।
पदभ्यां दक्षिणसव्याभ्यां मा व्यथिष्महि भूम्याम्।

अर्थात उठते हुए, बैठते हुए, खड़े हुए और दक्षिण तथा वाम पैरों से बढ़ते हुए हम भूमि को पीड़ा न पहुंचाएं। अपनी मातृभूमि के प्रति यह रेशम से कोमल उद्‌गार भारतीय मनीषा द्वारा दी गई राष्ट्रवाद की सर्वकालिक प्रगतिशील परिभाषा है। राष्ट्र के प्रति प्रेम की इससे सुंदर अभिव्यक्ति शायद ही दुनिया के किसी साहित्य में होगी ।

वास्तव में राष्ट्रवाद एक ऐसी सामूहिक भावना है, जिससे किसी भी देश के लोग एक सूत्र में बंधे होते हैं और अपने सभी प्रकार के मतभेदों को भुलाकर राष्ट्र की उन्नति एवं सुरक्षा में लगे रहते हैं। उदाहरण के लिए यदि किसी देश का अपने शत्रु देश से युद्ध चल रहा होता है तो संघर्ष के उस काल में राष्ट्र के आम नागरिक भी एकजुट होकर अपनी सरकार और सेना का समर्थन करते हुए मनोबल बढ़ाते हैं। इसके पीछे कहीं-न-कहीं वही राष्ट्रवाद की भावना होती है। कुछ लोगों में यह भावना इतनी तीव्र होती है कि वह राष्ट्र के लिए अपनी जान भी देने में नहीं हिचकिचाते। किसी बड़े देश के विभिन्न हिस्सों में रहने वाले नागरिक भले ही एक-दूसरे से अपरिचित हों, परंतु राष्ट्र के अस्तित्व के प्रश्न पर यह अपरिचय एक क्षण में समाप्त हो जाता है और अपने राष्ट्र से संबंधित मुद्दों पर वह सर्वसम्मति विकसित कर लेते हैं अथवा गंभीर विचार-विमर्श कर एक निष्कर्ष पर पहुंचने का प्रयास करते हैं। यह राष्ट्रवाद ही है, जब हम विदेश में प्रवास कर रहे होते हैं और वहां कोई अपने देश का मिल जाता है तो अपरिचित होते हुए भी उसके प्रति आत्मीयता महसूस करने लगते हैं। यह एक स्थूल अनुभव कहा जा सकता है राष्ट्रवाद की भावना का, परंतु वह राष्ट्रवाद ही है।

किसी भी राष्ट्र की उन्नति और समृद्धि के लिए आवश्यक है कि उसके नागरिक अपने भीतर राष्ट्रवाद की भावना को सतत जीवंत रखें। शायद इसी भाव को जीवित रखने के लिए तमाम राष्ट्रीय चिह्न, राष्ट्र-गीत और राष्ट्रीय पर्वों का अस्तित्व प्रत्येक देश में होता है। किसी भी राजनीतिक या अन्य आयोजन के अवसर पर राष्ट्रगीत का गायन या ध्वज का सम्मान इसी भावना को अक्षुण्ण रखने का एक प्रयास है। भारत की स्वाधीनता के बाद से 21वीं सदी के प्रारंभिक दशकों तक कुछ प्रतिगामी तत्वों ने सुनियोजित षड्यंत्र के तहत भारतीय अस्मिता और सांस्कृतिक चेतना को खंडित करने के लिए राष्ट्रवाद शब्द का प्रयोग ऐसे संकुचित अर्थों में करना प्रारंभ किया कि उसने राष्ट्रवाद को एक बोझ की तरह राष्ट्र की एकीकरण भावना को पंगु बनाने का प्रयास किया, जिसके लिए देश के वीर सपूतों ने रक्तरंजित लड़ाई लड़ी थी और अपना सर्वोच्च बलिदान देकर राष्ट्र को पराधीनता से मुक्त कराया था। थोड़े से आत्मघाती आत्मनिंदक इन देश विरोधियों ने राष्ट्रवाद की भावना से खिलवाड़ करते हुए इसका उपयोग भारतवासियों के बीच धर्म, जाति, भाषा और विचारधारा के आधार पर विभाजन करने वाले तत्व के रूप में किया।

इसके विपरीत सत्य यह है कि भारत में प्राचीन काल से ही राष्ट्रवाद की भावना 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और मानवतावाद के सिद्धांत पर टिकी हुई है। जब हमारी ऋचाएं बोलती हैं कि

'माता भूमिः पुत्रोऽहम् पृथिव्याः', तो यह भावना जाति, भाषा या विचारधारा के आधार पर समाज या राष्ट्र की तोड़ने की साजिश नहीं कही जा सकती। वास्तव में, यह वह संकुचित दृष्टि है, जिसने राष्ट्र-प्रेम को जाति, धर्म, संप्रदाय और भाषा के चश्मे से देखने का प्रयास किया है। राष्ट्र किसी धर्म या जाति से बिल्कुल अलग है। इसीलिए राष्ट्रवाद की भावना शुद्ध रूप से राष्ट्र के प्रति प्रेम, राष्ट्र की प्रगति और राष्ट्र की पहचान से जुड़ी है। राष्ट्र की अस्मिता पर कोई आंच न आने पाए, इस पवित्र भावना की अभिव्यक्ति है राष्ट्रवाद।

इसी राष्ट्रवाद को विद्यार्थियों से लेकर समाज तक वास्तविक रूप में गत 76 वर्षों से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ले जा रही है। भारत की स्वाधीनता के तत्काल बाद ही छात्रों को संगठित कर उन्हें राष्ट्र-शक्ति के रूप में पुनर्स्थापित करने के अभियान की शुरुआत के साथ लगभग सात दशक की अपनी संगठनात्मक विकास-यात्रा में अभाविप एक अलग प्रकार के छात्र-संगठन के रूप में आज प्रतिष्ठित है। अभाविप ने राष्ट्र, राज्य, संस्कृति, सभ्यता और धर्म की कोई नई परिभाषा नहीं प्रस्तुत की; अपितु वैभवशाली राष्ट्र के रूप में भारत को दुनिया के क्षितिज पर पुनः प्रतिष्ठित करना, अपना लक्ष्य बनाया है। परिषद के स्थापना वर्ष के प्रारंभिक चरण में ही छात्रों के संबंध में जब यह प्रचलित मान्यता थी कि 'छात्र आज का नहीं, कल का नागरिक है' तब अभाविप ने वर्तमान युग के अनुसार छात्रों की 'नागरिक भूमिका' को पहचाना और प्रस्तुत किया और कहा कि 'छात्र कल का नहीं, अपितु आज का नागरिक है' ऐसे विश्वास को लेकर अभाविप ने निरंतर निस्स्वार्थ भाव से राष्ट्र-सेवा करने हेतु तत्पर युवकों को प्रशिक्षित किया।

1949 में अभाविप ने 24 जुलाई से 31 जुलाई तक देशभर में भारत भारती सप्ताह के नाम से व्यापक स्तर पर एक जनमत संग्रह अभियान किया। अभाविप द्वारा देश का नाम भारतवर्ष, राष्ट्रभाषा हिंदी अथवा हिंदुस्तानी, राष्ट्रगीत वंदेमातरम या जन-गण-मन, संविधान की भाषा हिंदी अथवा अंग्रेजी, इन चार प्रश्नों पर किए गए 'जनमत-संग्रह' में 44 लाख 61 हजार 458 नागरिकों ने हिस्सा लिया। स्वतंत्र भारत के पुनर्निर्माण में लगे 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' एवं भारतीय संस्कृतिनिष्ठ राष्ट्रीय स्वरूप के समर्थक लोगों के लिए उपर्युक्त जनमत-संग्रह अभियान महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। अभाविप द्वारा कराए गए ऐतिहासिक एवं राष्ट्रीय महत्व के जनमत-संग्रह अभियान से एक स्तर तक सहायता मिली और संविधान में 'भारत', 'हिंदी' एवं 'वंदेमातरम्' को स्थान मिला। यहीं परिषद अर्थात राष्ट्रवाद का प्रमाण है ।

भारत, भारतीय संस्कृति, भारतीय स्वाभिमान, भारतीय परंपरा और स्वायत्तता की रक्षा के लिए जितना बलिदान, जितना संघर्ष भारतीय महापुरुषों का रहा है, वैसा उदाहरण विश्व में कहीं और नहीं मिलता। परिषद ने भविष्य के युवाओं में यह बलिदान, संघर्ष बार-बार स्मृति होते रहे और स्मृति होकर राष्ट्र के लिए समयानुकूल प्रतिबद्ध रहे, इसके लिए 1950 से ही रचनात्मक गतिविधियों को विस्तार देना प्रारंभ किया जिसमें महापुरुषों की जयंती विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन रचनात्मक कार्यक्रमों में देश के ख्यातिलब्ध विद्वान एवं नागरिक शामिल हुए। आज 76 वर्ष बाद भी अभाविप महापुरुषों के विचार, संघर्ष को विद्यार्थियों तक ले जाना किसी भी परिस्थिति में नहीं भूलती। राष्ट्रीय संवेदना का विस्तार करते हुए अभाविप ने राष्ट्रीय एकात्मता के सूत्रों से परिचित कराने के लिए पूर्वोत्तर के विद्यार्थियों को देश के कोने-कोने में प्रवास पर भेजकर अभाविप कार्यकताओं के आवास पर चार दिवसीय निवास की प्रक्रिया से उर्वरित भारत और पूर्वोत्तर के बीच उत्पन्न संवादहीनता की स्थिति और दूरी को समाप्त कर आत्मीय संवाद प्रारंभ किया।

घाटी के भयानक आतंकवाद के विरुद्ध आवाज उठाकर जम्मू एवं कश्मीर को अलग करने वाली संविधान की धारा-370 को हटाने की राष्ट्रव्यापी मुहिम भी अभाविप ने चलाई। "370 धोखा है कश्मीर बचा लो मौका है" इस नारे को संकल्प में परिवर्तित कर देश के हजारों विद्यार्थियों के समूह ने निस्वार्थ भाव एवं असीम राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत हो कर देश की एकता के लिए 1990 में चलो कश्मीर का आह्वान किया तो यह जानते हुए भी कि लाल चौक पर तिरंगा फहराने की चुनौती स्वीकार करना सीधे मृत्यु को स्वीकार करने जैसा है, इसके बाद भी देश भर से दस हजार से अधिक छात्र-छात्राएं वहां पहुंच गए। इसमें लगभग दो हजार छात्राएं थी। सभी लगातार उद्घोष कर रहे थे-'जहां हुआ तिरंगे का अपमान, वहीं करेंगे उसका सम्मान','जहां हुए बलिदान मुखर्जी-वह कश्मीर हमारा है, जो कश्मीर हमारा है-वह सारे का सारा है','खून भी देंगे, जान भी देंगे-देश की मिट्टी कभी न देंगे','कश्मीर हो या कन्याकुमारी-भारतमाता एक हमारी'। यह नारे ही आज भी रक्त में राष्ट्रवाद का संचार करने के लिए पर्याप्त है।

76 वर्ष के इतिहास में 'अभाविप' ने राष्ट्र की अस्मिता, उसकी भावात्मक सूत्रबद्धता तथा राष्ट्र की भू-सांस्कृतिक एकता के सरंक्षण तथा संवर्धन के लिए अनवरत प्रयास किए है। इस राष्ट्र के जन की सुरक्षा, उसके जीवन-मूल्यों का स्वाभिमान, उसके संस्कारों एवं परंपरागत आस्थाओं का प्रश्न-अभाविप के लिए कोई नीतिगत कार्यक्रम नहीं, वरन उसकी प्रतिबद्धता एवं श्रद्धा के बिंदु हैं। देश में कहीं से भी जुड़ा प्रश्न या संकट हो, अभाविप अपने संकल्प की प्रेरणा से स्वतः ही उस दिशा में कार्यशील हो जाती है। अभाविप ने भारत राष्ट्र के साथ अपने आपको एकात्म कर लिया है। प्रत्येक वह संकट, जहां देश की अस्मिता, अस्तित्व एवं गौरव के लिए चुनौती सामने आती है, अभाविप कार्यकर्ता अपनी योग्य भूमिका निभाने के लिए तत्पर हो जाते हैं।

1971 में अभाविप ने अपने 19वें राष्ट्रीय अधिवेशन में शैक्षिक परिसरों में बढ़ते नक्सलवादी हमलों पर प्रस्ताव के माध्यम से कांग्रेस और साम्यवादी गठबंधन द्वारा दिल्ली, बनारस, अलीगढ़, जोधपुर और केरल विश्वविद्यालयों में किए गए तत्कालीन हिंसक हमलों को गंभीर मानते हुए चेतावनी दी थी कि देश के किसी भी भाग में ऐसे हमलों से राष्ट्रनिष्ठ युवा आतंकित नहीं होंगे और भविष्य में पूरे देश में तत्काल प्रतिक्रिया भी व्यक्त करेंगे, अभाविप आतंकित करने वाले तत्वों को कुचल देगी। 2014 में नक्सली हिंसा के विरुद्ध पुनः अपनी आवाज बुलंद करते हुए अभाविप ने तत्कालीन नक्सली गतिविधियों को समाप्त करने के लिए केंद्र सरकार से प्रभावी अभियान चलाने की मांग की। प्रस्ताव में महानगरों के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों से नक्सल समर्थक प्राध्यापकों के पकड़े जाने की घटनाओं की गंभीरता को समझते हुए इस बात की आवश्यकता अनुभव की गई कि चरणबद्ध अभियान चला कर एक निश्चित समय सीमा में देश को नक्सल-मुक्त बनाया जाए ।

1978 में आपातकाल के बाद की स्थितियों और समय की पुकार विषय पर चर्चा करते हुए अभाविप ने राष्ट्रीय संक्रमणकालीन समीकरणों के संदर्भ में व्यापक चिंतन किया। अभाविप ने आपातकाल के उपरांत जनता सरकार द्वारा लोकतांत्रिक मूल्यों की पुनः स्थापना के लिए उठाए गए कदमों की एक ओर प्रशंसा की तो दूसरी ओर भविष्य में सत्ता के दुरुपयोग तथा अधिनायकवादी तत्त्वों के पुनः उभार से सचेत भी किया। तत्कालीन परिस्थितियों का आकलन करते हुए अभाविप ने आपातकाल के दोषियों के प्रति सरकार के क्षमाशील रवैया के कारण जनता के मोहभंग की ओर संकेत करते हुए लोकतंत्र को सुदृढ़ करने के लिए युवा-वर्ग से संघर्षशील बने रहने का आह्वान किया। अभाविप ने अधिवेशनों एवं राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठकों में अपने प्रस्तावों के मध्यम से राष्ट्रीय सुरक्षा, राष्ट्रीय अस्मिता पर समय-समय पर मुखरता से अपनी बात रखी और उस पर काम भी किया। यही कार्यशैली परिषद को राष्ट्रवाद का पर्याय बनाती है।

परिषद का अपने प्रस्तावों में राष्ट्रीय सुरक्षा पर चिंता व्यक्त करते हुए उस पर साहसिक कार्य करना, यह केवल 76 वर्ष इतिहास तक सीमित नहीं है। परिषद ने इस वर्ष भी अपने प्रस्ताव के माध्यम से देशवासियों से आह्वान किया है कि वह समाज में विभेद उत्पन्न करने वाले समस्त कारकों यथा जाति, पंथ, भाषा तथा क्षेत्र से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए कटिबद्ध रहें और भारत की आंतरिक सुरक्षा को बनाए रखने के लिए सतत सक्रिय एवं जागरूक रहें। यही परिषद यानी राष्ट्रवाद का संदेश है।

राष्ट्रवाद रागतत्व से अनुप्राणित एक विचारधारा है, जो किसी भी देश के नागरिकों की साझा अस्मिता की पहचान होती है। यह वही भावना है, जो एक ही राष्ट्र में विविध भाषाओं, वर्गों और संस्कृतियों को एक सूत्र में जोड़ते हुए उसे राष्ट्र-प्रेम की ओर उन्मुख करती है। किसी भी देश की प्रगति अथवा विकास इसकी बात में निहित होता है कि उसके नागरिक अपने देश के प्रति कितने समर्पित और निष्ठावान हैं। यह समर्पण एवं लगाव स्वाभाविक होता है और इसका पोषण तथा विकास परिवार से लेकर समाज और शिक्षालयों तक किया जाता है। भारत में तो कहा भी गया है- 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादिपि गरीयसी।' अर्थात मां और मातृभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हैं। राष्ट्रवाद को समझने के आज कई कोण हैं। एक सरसरी दृष्टि में देखा जाए तो सांस्कृतिक, भौगोलिक, आर्थिक एवं राजनीतिक रूप से राष्ट्रवाद विश्व के सभी राष्ट्रों में व्याप्त है। किंतु विद्यार्थी जीवन से ही राष्ट्रवाद को समझना है तो परिषद का कार्यकर्ता बन समझा भी जा सकता है और राष्ट्र के लिया जिया भी जा सकता है।

निर्मल पावन भावना, सभी के सुख की कामना
गौरवमय समरस जनजीवन, यही राष्ट्र आराधना
चले निरंतर साधना
चले निरंतर साधना ■

(लेखिका, अभाविप की राष्ट्रीय मंत्री है।)

Fairness : Social Justice Initiatives Impacting the Bhil Tribe

■ Dr. Pradeep Kumar

In India the concept of Justice is defined in a broader understanding than the remainder of the globe. In the Contemporary world justice has a more extensive understanding John Rawls describes justice as the 'first virtue of social institution,' To understand the given statement a social institution is an organised system of social order that regulates the behaviour of individuals within the society.

The above lays down a foundation for the word 'justice' and its implications in the society. When we narrow down to an Indian Context it is corroborated that the concept of 'dharma' has been engraved in the Indian culture, dharma mainly focuses on the way of living and prescribes to uphold and maintain the societal harmony. The Vedas and the Upanisads uphold the concept of dharma and promote a universal welfare 'Sarve Bhavantu Sukhinah'. Even though these texts focused on maintenance of order and harmony, the rigidification of the varna system with laid down the foundation of caste system from where began the discrimination and inequalities which contradicted the whole idea of order and harmony that was established by these texts.

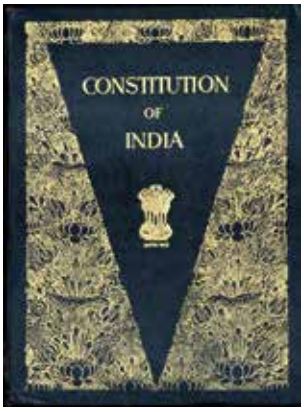

Equality is a concept of which the understanding differs to each individual and they have their own perception about the notion. But it can in general be defined as right of different groups of people to receive the same treatment. Under Article-14 of the constitution every citizen is guaranteed the right to equality and for equal protection of all the laws for an individual. But Article-15 (3) & (4) lays down certain exceptions to the rights provided under Article 14, that allows the state to make special provisions for women, children and other vulnerable sections of the society to ensure that all individuals have equal opportunities to express themselves without any external oppressive forces.

Now that we have a brief understanding of what Justice and equality is it becomes simpler to understand what social justice is. "Social Justice is the view that everyone deserves equal economic, political and social rights and opportunities. The key defining elements are fairness and equality." The term Social Justice was born in the 19th century with the aim to create communities which addressed the unfair treatment and exploitation of labours by the capitalist community. The early activists main concern was to the distribution of money, wealth and land between the poor and had a concept of taking from the rich and distributing it to the poor. As the time moved to the next century the activist of Social Justice had an evolution in their though process and shifted their concentration from purely economical to other aspects of social life and to include other elements of human life.

To elucidate the, considering the example of the reservation provisions that are mentioned in the Indian Constitution. Picking on the specific case of the Bhil tribes who are primarily found in Rajasthan, Gujrat, Madhya Pradesh and Maharashtra. The government recognises the

Bhil Tribe as Schedule Tribe and is providing them with certain protection under the law to aid their upliftment in the society.

Traditionally this community has faced social and economic disadvantages, inclusive of limited access to education, healthcare, employment, etc. When we see this, we get an overview of the opportunities and developments that they been snatched of, which leads to them being oppressed and not being able to stand in par with the rest of the world due to such constraints. Implementing Article-14 or the Right to Equality in this scenario the individuals of this community even when granted equality would not be able to match the other communities that were not subjected to similar or differential restraints, the concept of equality emphasises on society at large and cannot be tailored to meet the needs and demands of an individual to ensure that all are treated equally. That's when the concept of Social Justice comes into picture, which requires that certain provision or upliftment's are required to be provided to the communities that are not at par with the rest of the well-off communities and to provide them with aid till they are stable to manage themselves with the aid, they should be supported.

The reservation policy is backed up by the concept of Social Justice which majorly focuses on the upliftment of the backward classes and to provide equitable opportunities. There have been several policies including the reservations that are made available to the individuals belonging to the Bhil Community in educational institutions, employment opportunities, and political representation, these policies have proven to be a significant step. By providing such opportunities, we are addressing the historical injustice suffered by them and giving them an opportunity to stand as strong individuals. ■

(Author is Associate professor, School of Law Governance and public policy, Chanakya University, Bengaluru)

I निर्देश I

रैगिंग के विरुद्ध कार्रवाई न करने वाले 89 उच्च शिक्षा संस्थानों को नोटिस

छात्रों की सुरक्षा को केंद्र में रखकर उच्च शिक्षा संस्थानों में रैगिंग की समस्या को रोकने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने यूजीसी विनियम-2009 के तहत अनिवार्य रैगिंग विरोधी अनुपालन शपथ-पत्र प्रस्तुत नहीं करने वाले देश के 89 उच्च शिक्षा संस्थानों को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। रैगिंग के विरुद्ध निर्धारित ऑनलाइन अंडरटेकिंग जमा नहीं करने वाले छात्रों और संस्थानों को चिन्हित करते हुए नोटिस में कहा गया है कि बार-बार जारी किए गए परामर्शों, यूजीसी एंटी-रैगिंग हेल्पलाइन से कॉल और एंटी-रैगिंग मॉनिटरिंग एजेंसी से अनुवर्ती कार्रवाई के बावजूद, कई विश्वविद्यालय कार्रवाई करने में विफल रहे हैं।

आगामी शैक्षणिक सत्र 2025-26 को ध्यान में रखते हुए गत 9 जून को जारी किए नोटिस में सभी संस्थाओं को तीस दिनों के भीतर कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया है। यूजीसी ने सूचीबद्ध संस्थानों को निर्देश दिए हैं कि सभी छात्रों से ऑनलाइन एंटी-रैगिंग वचन पत्र लेकर संस्थागत अनुपालन रिपोर्ट तीस दिनों के भीतर दाखिल करें। साथ ही संस्थानों को अपने परिसरों में रैगिंग रोकने के लिए अपनाए गए उपायों पर एक विस्तृत रिपोर्ट देनी होगी। नियमों का समय सीमा के भीतर अनुपालन न करने पर यूजीसी अनुदान और वित्त पोषण को रद्द करने के साथ ही यूजीसी वेबसाइट पर गैर-अनुपालन का सार्वजनिक प्रकटीकरण करते हुए मान्यता रद्द करने या सम्बद्धता वापस लेने संबधी कार्यवाही भी की जाएगी।

नोटिस में यूजीसी सचिव प्रा. मनीष आर. जोशी ने कहा है कि छात्रों की सुरक्षा को ध्यान में रखकर सभी उच्च शिक्षा संस्थानों द्वारा रैगिंग विरोधी ढांचे का सख्ती से पालन किया जाना चाहिए। नियमों का गैर-अनुपालन छात्रों, विशेष रूप से नए छात्रों की सुरक्षा और मानसिक स्वास्थ्य को खतरे में डालता है। आयोग ने शिक्षा मंत्रालय के संबंधित अनुभागों और सभी नियामक निकायों को दोषी संस्थानों के विरुद्ध आगामी कार्रवाई के लिए भी सूचित किया है। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

पहली बार जाति गणना के साथ होगी देश की 16वीं जनगणना

केंद्र सरकार ने औपचारिक रूप से देश की 16वीं जनगणना की घोषणा कर दी है। स्वतन्त्र भारत के इतिहास में आम जनगणना के साथ पहली बार जाति गणना भी कराई जाएगी। दो चरणों में होने वाली जनगणना के लिए जनगणना अधिनियम-1948 की धारा 3 के तहत गत 16 जून को अधिसूचना जारी कर दी गई है। देश के ज्यादातर राज्यों में जनगणना के लिए 1 मार्च 2027 की आधी रात की तिथि को आधार माना जाएगा। लेकिन, ठंडे और बर्फबारी वाले इलाकों जैसे जम्मू-कश्मीर के कुछ हिस्से, हिमाचल प्रदेश, लद्दाख और उत्तराखंड में यह तिथि 1 अक्टूबर 2026 निर्धारित की गई है। इसका अर्थ यह भी है कि एक मार्च 2027 की आधी रात तक देश की जनसंख्या और सामाजिक स्थिति का जो भी आंकड़ा होगा, वही रिकार्ड में दर्ज किया जाएगा। जनगणना की पूरी प्रक्रिया एक मार्च 2027 तक पूरी कर ली जाएगी। जनगणना की प्रक्रिया लगभग 21 माह में पूरी होगी।

दो चरणों में होने वाली जनगणना के पहले चरण में हाउसलिस्टिंग ऑपरेशन (एचएलओ) में प्रत्येक घर की आवासीय स्थिति, परिसंपत्तियों और सुविधाओं का विवरण एकत्र किया जाएगा। इसके बाद, दूसरे चरण में जनसंख्या गणना (पीई) में प्रत्येक घर के प्रत्येक व्यक्ति का जनसांख्यिकीय, सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक और अन्य विवरण से जुड़े आंकड़ें एकत्र किए जाएंगे। जनगणना से जुड़े आंकड़ों को एकत्र करने के लिए लगभग 34 लाख गणनाकार एवं पर्यवेक्षक तथा लगभग 1.3 लाख जनगणना कार्यकर्ताओं को लगाया जाएगा।

स्वतन्त्र भारत के इतिहास में पहली बार जाति गणना कराने का निर्णय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल की राजनीतिक मामलों की समिति द्वारा लिया गया है। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने गत 30 अप्रैल को आगामी जनगणना में जातिवार गणना कराने का निर्णय लिया था। कारण यह है कि संविधान के अनुच्छेद-246 के अनुसार जनगणना संघ का विषय है, जो सातवीं अनुसूची के संघ सूची में 69वें स्थान पर उल्लिखित है। देश के सामाजिक ताने-बाने को राजनीतिक दबाव से मुक्त रखने के लिए केंद्र सरकार ने मुख्य जनगणना में ही जाति गणना कराने का निर्णय लिया गया है।

इससे पहले देश में स्वतंत्रता से पहले 1881 से 1931 के बीच हुई जनगणना में जातियों की गणना की गई थी। 1941 की जनगणना में जातीय आंकड़े तो एकत्र किए गए, लेकिन उनको सार्वजनिक नहीं किया गया। 1951 में स्वतंत्र भारत की पहली जनगणना के समय तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व वाली सरकार ने अनुसूचित जातियों (एससी) और अनुसूचित जनजातियों (एसटी) को छोड़कर जाति गणना को बंद करने का निर्णय लिया। यह निर्णय जातिगत आधार पर समाज में होने वाले विभाजन एवं राष्ट्रीय एकता में बाधा उत्पन्न होने की दृष्टि से लिया गया था।

1961 में केंद्र सरकार ने राज्यों को जाति आधारित सर्वेक्षण की अनुमति दे दी थी, जिसका उद्देश्य अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) की सूचियां तैयार करने का था। पिछले छह दशक से अधिक समय बाद अब केंद्र सरकार ने अगली राष्ट्रव्यापी जनगणना में जाति गणना को शामिल किया है। 2027 की जनगणना भारत के इतिहास की पहली डिजिटल जनगणना होगी, जिसमें मोबाइल ऐप, ऑनलाइन स्व-गणना और लगभग वास्तविक समय की निगरानी का उपयोग किया जाएगा। हालांकि 16वीं जनगणना 2021 में कराई जानी थी, लेकिन कोरोना महामारी के कारण 2021 में जनगणना स्थगित कर दी गई थी। यही कारण है कि 2011 के बाद अगली जनगणना 16 वर्ष बाद होने जा रही है। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

'रन फॉर मारवाड़' मैराथन का आयोजन

'खेलो भारत' गतिविधि के अंतर्गत अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) जोधपुर महानगर द्वारा 'रन फॉर मारवाड़' मैराथन का आयोजन जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय (जेएनवीयू) केंद्रीय छात्रसंघ कार्यालय से किया गया। मैराथन दौड़ में 812 पुरुष एवं 223 महिला धावकों ने हिस्सा लिया। मैराथन का शुभारंभ पूर्व सांसद कर्नल मानवेन्द्र सिंह, राज्यसभा सांसद राजेंद्र गहलोत तथा क्षेत्रीय संगठन मंत्री अश्विनी शर्मा ने हरी झंडी दिखाकर किया।

महानगर मंत्री विशाल गौड़ ने बताया कि अभाविप जोधपुर द्वारा युवाओं में स्वास्थ्य जागरूकता और स्वस्थ जीवनशैली को अपनाने का संदेश देने के लिए गत 4 मई 2025 को मैराथन का आयोजन किया गया। आयोजन में देशभर से आए युवा प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। पांच किलोमीटर दूरी वाली मैराथन में पुरुष वर्ग से हरियाणा के मोहित ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, उन्हें पुरस्कार के रूप में साइकिल प्रदान की गई । इसी प्रकार दूसरे स्थान पर रहे मोहन को ग्यारह हजार रुपए के तथा तीसरा स्थान प्राप्त करने वाले मुकेश को 51 सौ रुपए का वाउचर प्रदान दिया गया। महिला वर्ग में जोधपुर की रामली को प्रथम पुरस्कार स्वरूप साइकिल मिली, जबकि द्वितीय स्थान हासिल करने वाली पूजा को ग्यारह हजार रुपए और तीसरा स्थान प्राप्त करने वाली राजकुमारी को 51सौ रुपए का वाउचर दिया गया । दोनों वर्गों में सांत्वना पुरस्कार स्वरूप चार से दस स्थान पाने वालों को ट्रैक सूट और ग्यारह से बीस स्थान पाने वाले प्रतिभागियों को स्पोर्ट्स शूज दिए गए। कार्यक्रम का आरम्भ प्रांत मंत्री पूनम भाटी एवं कर्नल मानवेन्द्र सिंह के उद्बोधन और समापन अश्विनी शर्मा और सांसद राजेंद्र गहलोत के सम्बोधन से हुआ। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

। उत्तर प्रदेश ।

प्राध्यापक को हटाने की मांग को लेकर अभाविप ने किया प्रदर्शन, कुलपति को दिया ज्ञापन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) मेरठ प्रांत के चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय में छात्रों के साथ अभद्र व्यवहार और मारपीट की घटना सामने आई है। विश्वविद्यालय के प्रा. डी. के. चौहान द्वारा छात्रों के साथ की गई गाली-गलौज और हिंसा के विरोध में अभाविप कार्यकर्ताओं ने कुलपति कार्यालय पर तालाबंदी करते हुए जोरदार प्रदर्शन किया। अभाविप ने विश्वविद्यालय प्रशासन को चेतावनी दी है कि छात्र विरोधी मानसिकता बर्दाश्त नहीं की जाएगी। अभाविप ने कुलपति को पांच सूत्रीय ज्ञापन देकर दोषियों पर त्वरित कार्रवाई की मांग की।

अभाविप ने गत 30 मई को प्रदर्शन के बाद दिए गए ज्ञापन में कहा है कि प्राध्यापक चौहान के विरुद्ध पर छात्रों के साथ मारपीट और गाली-गलौज करने के मामले में पुलिस में प्राथमिकी दर्ज कराई जाए। साथ ही उन्हें शैक्षणिक एवं प्रशासनिक दायित्वों से तत्काल प्रभाव से मुक्त किया जाए। घटना के समय मौके पर मौजूद सुरक्षाकर्मियों की भूमिका की निष्पक्ष जांच कर उन पर आवश्यक कार्रवाई की जाए। छात्रों के साथ हुए दुर्व्यवहार एवं धमकाने की शिकायत दर्ज न करने वाले विश्वविद्यालय चौकी प्रभारी के विरुद्ध कठोर कार्रवाई के साथ भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो, इसके लिए ठोस और सख्त निर्णय लिए जाएं।

प्रांत मंत्री गौरव गौड़ के अनुसार जिस शिक्षक का कर्तव्य छात्रों को दिशा देना है, वही जब हिंसा का मार्ग अपनाए, तो यह पूरे शिक्षा जगत के लिए शर्मनाक है। अभाविप ऐसी तानाशाही मानसिकता को कभी स्वीकार नहीं करेगी। जब तक दोषियों पर सख्त कार्रवाई नहीं होती, तब तक अभाविप का आंदोलन जारी रहेगा। विभाग संयोजक आर्यन प्रजापति ने बताया कि प्राध्यापके चौहान का इतिहास छात्रों के प्रति हमेशा तानाशाहीपूर्ण और दमनकारी रहा है। अगर समय रहते उचित कार्रवाई नहीं हुई, तो आंदोलन को और तेज़ किया जाएगा। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

छात्रों को मिलेगी मानव मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता की शिक्षा

देश के उच्च शिक्षण संस्थानों में पाठ्यक्रम आधारित शिक्षा के साथ ही छात्रों को अब मानव मूल्य और व्यावसायिक (प्रोफेशनल) नैतिकता की शिक्षा भी प्रदान की जाएगी। स्नातक (यूजी) एवं परास्नातक (पीजी) स्तर की शिक्षा लेने वाले प्रत्येक छात्र को अपने विषय के पाठ्यक्रम के साथ ही मानव मूल्य, व्यावसायिक नैतिकता एवं वैश्विक नागरिक संबंधी विषयों को पढ़ना होगा। इसके लिए छात्रों को दो क्रेडिट अंक मिलेंगे, जो उनके प्रमाणपत्र में दर्ज किए जाएंगें और छात्रों को बेहतर संस्थानों में नौकरी हासिल करने में अपनी भूमिका का निर्वहन करेंगे।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने यह पहल मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से की है। आयोग ने व्यावसायिक नैतिकता से जुड़े शैक्षिक पाठ्यक्रम को दो क्रेडिट अंकों के साथ अनिवार्य रूप से लागू करने के लिए कहा है। इन विषयों को स्नातक स्तर पर छठवें और आठवें सेमेस्टर में एवं परास्नातक स्तर पर अंतिम वर्ष में पढ़ाने की सिफारिश की गई है। जानकारी के अनुसार आयोग ने मूल्य प्रवाह-2.0 : उच्च शिक्षा संस्थानों में मानवीय मूल्यों और व्यावसायिक नैतिकता के समावेश पर संशोधित दिशा-निर्देश जारी किए हैं। यह दिशा-निर्देश राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के तहत प्रासंगिक कार्यक्रम के संचालन, कार्यान्वयन, निगरानी और सुदृढ़ीकरण का सुझाव देते हैं। आयोग ने सभी उच्च शिक्षा संस्थानों से संशोधित दिशा-निर्देशों को लागू करने के लिए कहा है। संशोधित दिशा-निर्देश उच्च शिक्षा संस्थानों के पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धति को छात्रों के बीच मौलिक कर्तव्यों और संवैधानिक मूल्यों के प्रति गहरा सम्मान, देश के साथ जुड़ाव और बदल रहे विश्व में भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के प्रति सजग जागरूकता विकसित करने के लिए प्रस्तावित करते हैं। इनमें सत्य, धर्म, शांति, प्रेम, अहिंसा, वैज्ञानिक सोच, नागरिकता मूल्य और जीवन-कौशल जैसे सार्वभौमिक मानवीय मूल्य शामिल हैं। आयोग के अनुसार मानव मूल्यों और व्यावसायिक नैतिकता की शिक्षा प्रत्येक स्नातक और परास्नातक पाठ्यक्रम

के साथ ही दी जाएगी। पाठ्यक्रम में एक क्रेडिट अंक सैद्धांतिक शिक्षा और दूसरा क्रेडिट अंक प्रायोगिक शिक्षा पर केंद्रित होगा। यह पहल छात्रों को अच्छे चरित्र का निर्माण करने, जीवन में विभिन्न समस्याओं का प्रभावी ढंग से सामना करने और मूल्यों का जीवन जीने में सक्षम बनाएगी। इसके साथ ही छात्रों को व्यावसायिक नैतिकता के विषय में भी जानकारी प्रदान की जाएगी, जो उन्हें अपने करियर में नैतिक रूप से कार्य करने में मदद करेगी। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

रायपुरः राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक से पहले आयोजित केंद्रीय कार्यसमिति एवं आयाम बैठक को संबोधित करते हुए अभाविप के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री एस. बालकृष्ण। मंचासीन अभाविप राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही, महामंत्री डा. वीरेंद्र सोलंकी, संगठन मंत्री आशीष चौहान तथा विशेष आमंत्रित सदस्य प्रा. मिलिंद मराठे

रायपुर : डा. अरिबम इंदिरा द्वारा लिखित पुस्तक 'वॉयस ऑफ होप-एबीवीपी'स सपोर्ट टू मणिपुर'स यूथ एट टाइम्स ऑफ क्राइसिस' का लोकार्पण करते हुए अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही, राष्ट्रीय महामंत्री डा. वीरेंद्र सोलंकी, राष्ट्रीय मंत्री क्षमा शर्मा एवं अन्य

RNI NO.: DELBIL/2017/73636
DATE OF POSTING: 10-11 JUNE, 2025
DATE OF PUBLISHING: 8 JUNE, 2025

POST OFFICE: NDGPO, NEW DELHI
POSTING REGISTRATION NO. DL(C)-11/1409/2024-26

रायपुरः राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक का शुभारंभ करते अभाविप राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही, महामंत्री वीरेंद्र सोलंकी एवं संगठन मंत्री आशीष चौहान

रायपुरः प्रदर्शनी का अवलोकन करते छत्तीसगढ़ के उप मुख्यमंत्री अरुण साव, अभाविप पदाधिकारी एवं अन्य